Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय

तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

> **भिक्षु वाणी**
>
> ज्यूं अधर्म रा कामा धर्म मांहे घाल्या,
> धर्म रा कामा अधर्म में घाल्या।
> दोनूंई विध कर्म बांधे अग्यांनी,
> दुरगत मांहे चाल्या।।
>
> अज्ञानी लोग अधर्म के कार्य को धर्म में और धर्म के कार्य को अधर्म में डाल देते हैं। वे दोनों ओर से बंध जाते हैं, उनकी दुर्गति होती है।
>
> –आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली | ● वर्ष 27 ● अंक 37 ● 15 जून - 21 जून 2026 | प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 13-06-2026 ● पेज 12 | ₹ 10 रुपये

शारीरिक व्यायाम नहीं बल्कि आंतरिक अध्यात्म साधना है असली योग: आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

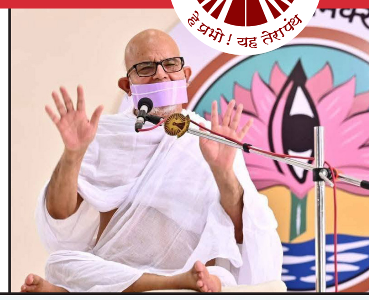

बहुत बड़े पांडित्य के बिना भी कषाय मंदता और आचार की शुद्धि से निश्चित है आत्मा का कल्याण: आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 12

Address Here

बीमारी और मौत तो निश्चित हैं, पर मन में निर्मलता और समता बनाए रखना ही है सर्वोच्च तपस्या : आचार्यश्री महाश्रमण

'संसार में दुःख है' विषय पर युगप्रधान की अमृत देशना;—पाप तत्व दुःख है और आश्रव उसका कारण, संवर-निर्जरा से ही कटेगा कर्मों का बंधन

लाडनूं।
10 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'संसार में दुःख है' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से गहन तात्विक अमृत देशना प्रदान की। आचार्यश्री ने नव-तत्वों के गणित से दुःख और दुःख-मुक्ति के अंतर्संबंधों को खोलते हुए संसार की नश्वरता के बीच समता भाव की साधना का कड़ा पाठ पढ़ाया।

दुःख भी बन सकता है आत्म-विकास का माध्यम : आचार्य प्रवर ने कष्टों के सकारात्मक और व्यावहारिक पहलू को समझाते हुए मुख्य बिंदु रेखांकित किए।

१. विपत्ति में जागता है संकल्पः यह संसार स्वयं दुःख रूप है और यहाँ पग-पग पर कष्ट हैं; परंतु दुःख की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसी विकट स्थिति में इंसान के भीतर धर्म की सच्ची भावना, प्रभु का स्मरण, इष्ट की स्मृति और उत्तम संकल्प जागृत होते हैं। इसलिए दुःख कई बार मनुष्य के आंतरिक विकास में सहायक बनकर उसे भविष्य के परम सुख (मोक्ष) की ओर गतिमान कर देता है।

२. कार्य-कारण वाद और ९ तत्व : जैन दर्शन के ९ तत्वों के अनुसार दुःख एक 'कार्य' है। नव-तत्वों में पाप तत्व साक्षात दुःख है और जब इस पाप का उदय होता है, तभी जीवन में कष्ट आते हैं। वहीं, आश्रव तत्व इस दुःख का मूल 'कारण' है।

> विपत्ति और कष्ट हमेशा डुबोते नहीं, कई बार इंसान को अंदर से मजबूत कर आत्म-विकास के मार्ग पर आगे बढ़ाते हैं।
> –आचार्यश्री महाश्रमण

आगम के चार महादुःखः जरा से पहले जागने की चेतावनी : शांतिदूत ने संसार के चक्रव्यूह और मानव जीवन की चार कड़वी सच्चाइयों पर प्रकाश डाला।

१. जन्म और २. बुढ़ापा : आगम में चार प्रकार के मुख्य दुःख बताए गए हैं, जिनमें पहला जन्म लेना ही महाकष्ट है। दूसरा दुःख बुढ़ापा (जरा) है। पूज्य प्रवर ने कड़ा बोध देते हुए चेताया कि जब तक बुढ़ापा शरीर को पूरी तरह जर्जर और पीड़ित करने न लगे, उससे पहले ही हर समझदार इंसान को समय रहते धर्म का संचय कर लेना चाहिए।

३. बीमारी और ४. मृत्यु : तीसरा दुःख बीमारी है, जो कभी भी किसी को भी घेर सकती है—चाहे वह बच्चा हो, जवान हो या बूढ़ा। बीमारी के समय रोने-बिलखने के बजाय समता भाव रखना चाहिए। चौथा दुःख मृत्यु है। मरण के भय से कांपने के बजाय आत्मा में निर्मलता बनाए रखना ही जैन शासन का मूल आचार है।

संवर-निर्जरा ही हैं पूर्ण दुःख-मुक्ति के मार्ग : पूज्य प्रवर ने दुःखों के इस अंतहीन चक्र से हमेशा के लिए छूटने का अचूक आध्यात्मिक वैज्ञानिक उपाय बताया।

(शेष पेज ९ पर)

मलमय काया को चमकाना 'विष' के समान, पर इसी नश्वर देह के माध्यम से संभव है परम पद की प्राप्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

'अशाश्वत आवास' विषय पर युगप्रधान की अमृत देशना;—संत इस नश्वर काया का पोषण केवल साधना और आत्म-कल्याण के लिए ही करते हैं

लाडनूं।
09 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'अशाश्वत आवास' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से गहन तात्विक विवेचन प्रस्तुत किया। आचार्यश्री ने जैन वाङ्मय में वर्णित शरीर-विज्ञान के रहस्यों को खोलते हुए नश्वर देह की अशुचिता और इसके माध्यम से मोक्ष प्राप्ति के अद्भुत अंतर्विरोध को अत्यंत सरल शब्दों में समझाया।

> मृत्यु के बाद यह स्थूल शरीर यहीं छूट जाता है, केवल आत्मा, तेजस और कार्मण शरीर ही जाते हैं अगले जन्म में
> -आचार्यश्री महाश्रमण

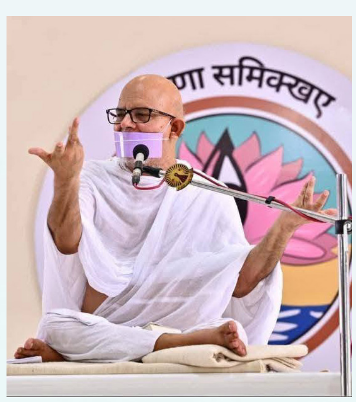

मृत्यु के बाद साथ जाने वाले तीन सूक्ष्म तत्वः आचार्य प्रवर ने आत्मा और शरीर के जन्म-जन्मांतर के साहचर्य को स्पष्ट करते हुए मुख्य बिंदु समझाए।

१.पाँच शरीरों का विज्ञानः जैन दर्शन में पाँच प्रकार के शरीर (औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तेजस और कार्मण) बताए गए हैं। इनमें हमारा यह दिखाई देने वाला औदारिक (स्थूल) शरीर मृत्यु के समय यहीं छूट जाता है, यह अगले जन्म में साथ नहीं जाता।

२. कार्मण और तेजस सूक्ष्म सहचर : जब आत्मा एक चोला छोड़कर अगले जन्म की यात्रा पर निकलती है, तब उसके साथ अत्यंत सूक्ष्म कार्मण शरीर (कर्मों का लेखा-जोखा) और तेजस शरीर ही जाते हैं। इस प्रकार अगले जन्म में केवल आत्मा, तेजस और कार्मण शरीर—ये तीन ही साथ जाते हैं। मोक्ष की प्राप्ति के प्रथम समय में जब चार अघाती कर्मों का पूर्ण क्षय हो जाता है, तब कार्मण शरीर का अस्तित्व हमेशा के लिए मिट जाता है।

शरीर का तथ्यात्मक बोधः दुःख और क्लेशों का पात्र– शांतिदूत ने औदारिक शरीर के स्वभाव पर प्रहार करते हुए वैराग्य के पाँच सूत्र दिएः १. शरीर अनित्य हैः यह आत्मा का केवल एक 'अशाश्वत आवास' (किराए का घर) है, जिसे एक न एक दिन खाली करना ही पड़ता है।

(शेष पेज ९ पर)

धन, पद और प्रतिष्ठा का त्याग करने से ही मिलेगी सच्ची शांति, इच्छाओं का परिसीमन करें गृहस्थ : आचार्यश्री महाश्रमण

'लोक में शांतिकर्ता शांति' विषय पर युगप्रधान की अमृत देशना;—भौतिक जगत के सर्वोच्च 'चक्रवर्ती' पद को ठुकराकर ही शांतिनाथ प्रभु बने तीर्थंकर

लाडनूं।
07 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखंड परिव्राजक, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'लोक में शांतिकर्ता शांति' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से गहरा तात्विक प्रतिबोध प्रदान किया। आचार्यश्री ने जैन भूगोल (कॉस्मोलॉजी) के रहस्यों को खोलते हुए भौतिक वैभव के त्याग और आत्म-कल्याण के शाश्वत मार्ग पर चलने की अमर प्रेरणा दी।

जैन भूगोलः १५ कर्म भूमियों का विज्ञान : आचार्य प्रवर ने ब्रह्मांड की रचना और तीर्थंकरों की अवस्थिति को विस्तार से समझाया।

१. १५ कर्म भूमियों की व्यवस्थाः जैन भूगोल के अनुसार इस मनुष्य लोक में कुल पन्द्रह कर्म भूमियां हैं। जंबू द्वीप में एक भरत क्षेत्र, एक ऐरावत क्षेत्र और एक महाविदेह क्षेत्र! इसी प्रकार घातकी खंड द्वीप में दो-दो और अर्द्ध पुष्करवर द्वीप में भी दो-दो क्षेत्र मिलाकर कुल १५ कर्म भूमियां बनती हैं।

२.भरत और महाविदेह में अंतरः हमारे भरत क्षेत्र में तीर्थंकरों की चौबीसी की काल चक्र के अनुसार व्यवस्था होती है, जिससे यहाँ हमेशा तीर्थंकरों का सान्निध्य नहीं रहता। इसके विपरीत, महाविदेह क्षेत्र में चौबीसी की व्यवस्था नहीं है; वहाँ कम से कम २० तीर्थंकर हमेशा साक्षात रूप में विद्यमान रहते हैं।

तीर्थंकर और आचार्य का भेदः ५४ उत्तम पुरुष : शांतिदूत ने धार्मिक जगत के अधिकृत प्रवक्ताओं और महापुरुषों के भेदों को स्पष्ट किया।

१. साधना से मिलता है तीर्थंकरत्व : तीर्थंकर और आचार्य में एक बहुत बड़ा सैद्धांतिक अंतर है। आचार्य किसी पूर्व आचार्य के मनोनीत उत्तराधिकारी के रूप में पद ग्रहण करते हैं, जबकि तीर्थंकर किसी के मनोनीत उत्तराधिकारी नहीं होते। वे अपने पूर्व जन्मों के उत्कृष्ट कृतित्व, उग्र साधना और महापुण्य के बल पर स्वयं तीर्थंकरत्व को प्राप्त करते हैं। वे सहज रूप से सर्वज्ञ व सर्वद्रष्टा होते हैं और उनकी वाणी ही स्वयं आगम बन जाती है।

२. अध्यात्म और भौतिकता के दो सर्वोच्च शिखर : जैन आगमों में कुल ५४ उत्तम पुरुषों (२४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती, ९ वासुदेव और ९ प्रतिवासुदेव) का वर्णन है। चक्रवर्ती जहाँ भौतिक (सांसारिक) जगत का सर्वोच्च पद है, वहीं तीर्थंकर आध्यात्मिक जगत का अंतिम और सर्वोच्च शिखर हैं।

> ”
> तीर्थंकर किसी के मनोनीत उत्तराधिकारी नहीं होते, वे अपनी साधना और पुण्यवत्ता से स्वयं पाते हैं सर्वोच्च पद
> -आचार्यश्री महाश्रमण

३. काल चक्र का प्रभाव : वर्तमान में भरत क्षेत्र में अवसर्पिणी काल (घटता हुआ समय) चल रहा है। इसके पहले आरे से छठे आरे तक मनुष्यों की आयु और शरीर की अवगाहना (ऊंचाई) क्रमशः घटती जाती है, जबकि उत्सर्पिणी काल में यह पुनः बढ़ती है।

भगवान शांतिनाथ का महान आदर्शः इच्छाओं का परिसीमन : पूज्य प्रवर ने चक्रवर्ती सम्राट से तीर्थंकर बने भगवान शांतिनाथ के जीवन से गृहस्थों को सीख दी।

१. एक समय के बाद जरूरी है त्याग : भगवान शांतिनाथ इस अवसर्पिणी काल के ऐसे महान उत्तम पुरुष हुए, जो एक ही जन्म में चक्रवर्ती भी बने और तीर्थंकर भी। इतने असीम भौतिक वैभव और साम्राज्य के शिखर पर होने के बावजूद उन्होंने उसका पल भर में त्याग कर दिया और आत्म-कल्याण के लिए संयम पथ पर बढ़ गए।

२. त्याग से ही संभव है शांतिः इस महान चरित्र से मानव समाज को यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि जीवन में व्यक्ति चाहे कितने ही ऊंचे पद पर क्यों न पहुँच जाए, एक समय के पश्चात उसे अपनी आत्मा के कल्याण की ओर मुड़ना ही चाहिए। मनुष्य को अपनी अनियंत्रित इच्छाओं, आकांक्षाओं, धन, पद और प्रतिष्ठा के कदाग्रह को छोड़ना होगा। गृहस्थ समाज भी अपनी मर्यादा और इच्छाओं का जितना परिसीमन (सीमाकरण) करेगा, जीवन में उतनी ही सुख-शांति का अवतरण होगा। प्रवचन के अंत में आचार्यश्री ने चारित्रात्माओं को चेताया कि साधु जीवन का मूल आधार ही त्याग और संयम है, अतः पाँच महाव्रतों, पाँच समितियों और तीन गुप्तियों के प्रति पल-पल सजग रहना ही सुश्रमण का परम कर्तव्य है।

शारीरिक व्यायाम नहीं बल्कि आंतरिक अध्यात्म साधना है असली योग : आचार्यश्री महाश्रमण

'भोग का कटुक विपाक' विषय पर युगप्रधान की देशना;— प्राणों से भी प्यारी है संयम साधना, इसे किसी भी हाल में न छोड़ें

लाडनूं।
08 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी योगक्षेम वर्ष के अंतर्गत अपनी अध्यात्म गंगा से जन-जन के मानस को सिंचित कर रहे हैं। प्रातःकालीन सुधर्मा सभा में 'भोग का कटुक विपाक' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से पावन प्रतिबोध प्रदान करते हुए शांतिदूत ने भीतरी जगत के रहस्यों, आचार की सर्वोच्चता और भोग व योग के बुनियादी अंतर को स्पष्ट किया।

भीतर का जगत : कार्मण शरीर और जातिस्मृति ज्ञान : आचार्य प्रवर ने मनुष्य की आंतरिक चेतना और कर्मों के अंतसंबंधों को रेखांकित किया।

१. आँखों से ओझल भीतरी संसार : हमारा आंतरिक जगत आत्मा और कर्मों का एक मिला-जुला संसार है। हम बाहरी दुनिया को तो थोड़ा-बहुत देख पाते हैं, लेकिन कार्मण शरीर और आत्मा से युक्त भीतरी जगत को इन चर्म चक्षुओं (आँखों) से देख पाना साधारणतया संभव नहीं है। गहन साधना के बल पर ही भीतर का अवबोध संभव है।

२. जन्मों तक चलते हैं संबंध : पूज्य प्रवर ने फरमाया कि पूर्वजन्मों का स्मरण कराने वाला 'जातिस्मृति ज्ञान' तीन कारणों (स्वयं की चेतना, तीर्थंकर की देशना या उनके पास से सुनकर) से प्रकट होता है। इस ज्ञान से जहाँ आत्मा में वैराग्य की वृद्धि होती है, वहीं यह सत्य भी सामने आता है कि इस संसार में हमारी आपसी मित्रता और द्वेष (वैर) के संबंध किसी एक जन्म के नहीं, बल्कि कई जन्मों तक लगातार पीछे-पीछे चलते रहते हैं।

भोग और योग का अंतर्विरोधः विषफल के समान सुख : शांतिदूत ने आगामी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के संदर्भ में योग की वास्तविक परिभाषा दी।

१. शारीरिक कसरत नहीं है असली योग : वर्तमान युग में योग का अर्थ केवल शारीरिक व्यायाम या आसनों तक सीमित मान लिया गया है। यह विचार इतना व्यापक हो चुका है कि आगामी २१ जून को पूरी दुनिया में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाएगा; परंतु जैन दर्शन के अनुसार योग का वास्तविक और मूल अर्थ केवल शारीरिक कसरत नहीं, बल्कि आत्मा को परमात्मा से जोड़ने वाली 'अध्यात्म साधना' है।

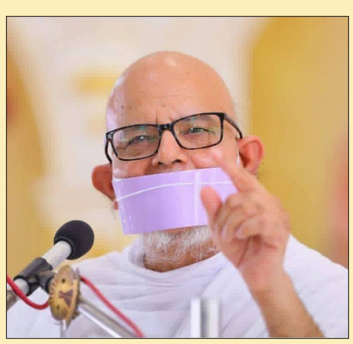

२. विषफल का कड़वा परिणाम : संसार के भौतिक भोग बिल्कुल 'विषफल' के समान हैं। विषफल खाते समय शुरुआत में तो बहुत मीठा और स्वादिष्ट लगता है, परंतु उसका अंतिम परिणाम जीवन का अंत (कड़वा) कर देता है। ठीक इसी प्रकार, सांसारिक वैभव और इंद्रियों के भोग एक बार तो बहुत लुभावने लगते हैं, पर आत्मा की दृष्टि से उनका अंतिम विपाक केवल दुःख और दुर्गति ही होता है।

> ”
> शुरुआत में स्वादिष्ट लगने वाले सांसारिक भोग अंत में विषफल की तरह देते हैं परम दुख
> –आचार्यश्री महाश्रमण

आचार और विनय ही साधना का केंद्र : पूज्य प्रवर ने चारित्रात्माओं को साधुत्व के मूल तत्वों के प्रति सजग रहने का कड़ा संदेश दिया।

१. भाषण कला केवल परिधि : प्रवचन कला, वक्तृत्व कौशल या मंच संचालन जैसी योग्यताएं साधना के मार्ग में केवल बाहरी 'परिधि' (दिखावा या विस्तार) मात्र हैं। साधु जीवन का असली 'केंद्र' (आत्मा) तो केवल आचारशीलता और विनयशीलता ही है। यदि केंद्र मजबूत नहीं है, तो परिधि का कोई मूल्य नहीं है।

२. बचपन का त्याग व संयम : जो आत्माएं सांसारिक भोगों की निस्सारता को समझकर बचपन या छोटी उम्र में ही त्यागी बनकर साधुत्व ग्रहण कर लेती हैं, और जीवन भर महाव्रतों, पांच समितियों व तीन गुप्तियों का पालन करती हैं, उनका पुरुषार्थ व संयम साधना असीम है। हर साधक को अपने प्राणों से भी बढ़कर अपनी संयम साधना की रक्षा करनी चाहिए। मंगल प्रवचन के संपन्न होने पर पूज्य प्रवर आचार्यश्री ने उपस्थित साधु-साध्वियों द्वारा संघ व्यवस्था और आचार चर्या को लेकर प्रस्तुत की गई तात्विक जिज्ञासाओं का आगम के आलोक में सहज समाधान प्रदान किया।

GENZ Conclave 2026

तेरापंथ किशोर मंडल का 21वां राष्ट्रीय सम्मेलन

संस्कार, नवाचार और व्यक्तित्व निर्माण का राष्ट्रीय महाकुंभ भव्यता के साथ सम्पन्न

लाडनूं।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल का 21वां राष्ट्रीय सम्मेलन GEN-Z Conclave 2026 Think - Learn - Transform युवा आलोक, लाडनूं में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। तीन दिवसीय इस राष्ट्रीय अधिवेशन में देश के 56 तेरापंथ किशोर मंडल शाखाओं से आए 530 से अधिक किशोरों ने सहभागिता कर संस्कार, नेतृत्व, नवाचार, आध्यात्मिकता एवं व्यक्तित्व विकास के विविध आयामों को आत्मसात किया।

अधिवेशन के प्रथम दिवस का शुभारंभ आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगलपाठ से हुआ। युवालोक में आयोजित उद्घाटन सत्र में मुनि नयकुमारजी द्वारा नमस्कार महामंत्र का संगान कराया गया तथा अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के पूर्व अध्यक्ष सुखराज सेठिया द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया गया।

अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने सम्मेलन के शुभारंभ की घोषणा करते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ प्रत्येक किशोर को अपनी प्रतिभा विकसित करने का अनूठा मंच प्रदान करता है और हम सभी सौभाग्यशाली हैं कि हमें इस धर्मसंघ में जन्म लेने का अवसर प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर 21वें राष्ट्रीय सम्मेलन का थीम सॉन्ग भी प्रस्तुत किया गया।

प्रथम दिवस के अंतर्गत 'Mind Rush' नामक क्विज एवं 'ब्रेन-स्टॉर्मिंग' गतिविधि का आयोजन किया गया। 'Summit Studio&The Creators Lab' सत्र में प्रसिद्ध वक्ता एवं स्टार्टअप उद्यमी हर्ष दूगड़ ने सोशल मीडिया कंटेंट क्रिएशन एवं प्रभावशाली डिजिटल उपस्थिति के विषय में किशोरों का मार्गदर्शन किया। दिवस का समापन 'भिक्षु अंतरंग' कार्यक्रम के साथ हुआ, जिसमें प्रसिद्ध गायक दर्शन चोपड़ा ने अपनी प्रस्तुति से पूरे वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से सराबोर कर दिया।

द्वितीय दिवस का शुभारंभ 'संस्कार केन्द्र' के प्रस्तावित प्रतिरूप के प्रस्तुतिकरण के साथ हुआ। इस अवसर पर TKM AXIS के प्रगति प्रतिवेदन तथा टीम बिल्डिंग एवं नवाचार आधारित गतिविधियों के प्रतिरूप प्रस्तुत किए गए। परम पूज्य गुरुदेव ने प्रस्तुत प्रतिरूपों का अवलोकन कर किशोरों पर महती कृपा करवाई। संस्कार केन्द्र के प्रति जनजागरण हेतु Run for Sanskar Kendra मैराथन का भी आयोजन किया गया।

द्वितीय सत्र TTF शौर्य के अंतर्गत तेरापंथ टास्क फोर्स द्वारा किशोरों को आपदा प्रबंधन, राहत कार्यों एवं मानव सेवा के लिए प्रशिक्षित एवं प्रेरित किया गया। इसके पश्चात प्रधानमंत्री बाल पुरस्कार से सम्मानित एवं वेल्ट्रिनॉक्स स्टार्टअप के संस्थापक आर्यन सिंह ने किशोरों को अपने अभिनव विचारों को सफल स्टार्टअप में परिवर्तित करने की प्रेरणा प्रदान की।

'भिक्षु दरबार' नाटक मंचन में पंचायत की थीम पर आधारित एक अभिनव प्रस्तुति के माध्यम से आचार्यश्री भिक्षु के दर्शन एवं सिद्धांतों को सरल एवं प्रभावशाली शैली में प्रस्तुत किया गया। मुनि योगेशकुमारजी ने किशोरों को धर्मसंघ के प्रति समर्पण, आत्मविकास एवं व्यापक चिंतन के लिए प्रेरित किया।

दिवस का मुख्य आकर्षण Innovision Expo एवं Kishore Fiesta रहा। इस आयोजन में लगभग 12 किशोरों ने अपने स्टार्टअप एवं नवाचारों का प्रदर्शन किया, जबकि देशभर के 17 तेरापंथ किशोर मंडलों ने विभिन्न रचनात्मक एवं प्रेरणादायक स्टॉल लगाकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस अनूठे आयोजन ने अधिवेशन को विशेष पहचान प्रदान की।

तृतीय एवं अंतिम दिवस पर परम पूज्य गुरुदेव के पावन सान्निध्य में मंचीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने GENZ Conclave की अवधारणा, उद्देश्यों एवं अधिवेशन की प्रमुख उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। अध्यक्ष महोदय ने अभातेयुप के तत्वावधान में संस्कार केन्द्र के शुभारंभ की घोषणा की। उन्होंने प्रायोगिक तौर पर प्रथम चरण में जयपुर, चेन्नई, बैंगलोर एवं सूरत में संस्कार केन्द्र के शीघ्र शुभारंभ की घोषणा की। प्रतिवर्ष अगस्त के प्रथम रविवार को 'किशोर दिवस' के आयोजन की घोषणा की। प्रत्येक तेरापंथी किशोर को तेरापंथ किशोर मंडल का सदस्य बनाने हेतु सलक्ष्य प्रयास करने की बात रखी।

तेरापंथ किशोर मंडल के राष्ट्रीय प्रभारी मयंक धाकड़ द्वारा TKM AXIS का वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन पूज्य गुरुदेव के समक्ष प्रस्तुत किया गया एवं अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा संपादित किये जाने वाले विशेष कार्यक्रमों की अवगति प्रस्तुत की। कार्यक्रम के दौरान 'दान' विषय पर आधारित एक प्रभावशाली नाट्य प्रस्तुति भी दी गई।

मंगल उद्बोधन प्रदान करते हुए परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया- ''तेरापंथ किशोर मंडल का यह सम्मेलन अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद से जुड़ा हुआ एक उपक्रम है। अवलोकन में यह भी आया कि किशोरों द्वारा रास्ते की सेवा में, विशेषकर चारित्रात्माओं की सेवा में भी, अपना योगदान दिया जा रहा है। अभी एक अभिनयात्मक प्रस्तुति के माध्यम से तेरापंथ दर्शन को समझाने का प्रयास किया गया, जिसमें असंयमी-संयमी की अवधारणा, देहदान, नेत्रदान, रोटीदान आदि विषयों को सरल रूप में प्रस्तुत किया गया।

यह प्रस्तुति आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष एवं भिक्षु चेतना वर्ष के संदर्भ में और भी अधिक प्रासंगिक बन जाती है। हमारा चिंतन है कि इस वर्ष के अधिवेशनों एवं सम्मेलनों में तेरापंथ दर्शन तथा आचार्य भिक्षु के जीवन एवं दर्शन का प्रभाव रहना चाहिए। आचार्यश्री भिक्षु को जानने-समझने के लिए उनके जीवनवृत्त एवं साहित्य का अध्ययन हो तथा 'तेरापंथ प्रबोध' के माध्यम से भी उनके जीवन और दर्शन को समझने का अच्छा अवसर प्राप्त हो सकता है। किशोरों पर विशेष ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है, ताकि यह पीढ़ी सुसंस्कारी, उपयोगी और सुदृढ़ बने तथा मार्ग से विचलित न हो। इसी दृष्टि से अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा किया जा रहा व्यक्तित्व निर्माण एवं किशोर निर्माण का कार्य महत्वपूर्ण है। यह समय गर्मी की छुट्टियों का भी है और इस बार यह सम्मेलन जैन विश्व भारती परिसर में आयोजित हो रहा है, जहाँ पर्याप्त सुविधा भी उपलब्ध है। यह स्थान स्वयं तेयुप का अपना घर है। यहां युवालोक, युवाआलोक भवन, जो मानों तेयुप का अपना घर है। अतः अपने ही घर एवं इसके परिपार्श्व में सम्मेलन का आयोजन किशोरों के लिए एक अच्छा अवसर है। किशोरों में अपनी शक्ति और ज्ञान के सदुपयोग का संकल्प भी विकसित होना चाहिए। प्रस्तुत की गई गीतिकाओं सहित कुल छह गीत स्वाध्याय की दृष्टि से उपयोगी हैं तथा उनसे तत्वज्ञान का भी विकास होता है। इस प्रकार किशोरों के सर्वांगीण विकास, उनकी उचित सार-संभाल तथा अधिकाधिक किशोरों को जोड़ने का प्रयास निरंतर होता रहना चाहिए। किशोर दिवस के संबंध में भी पूर्व में कल्याण परिषद गोष्ठी एवं चिंतन गोष्ठी में विचार-विमर्श एवं निर्णय हुआ है। अतः किशोर दिवस की समुचित तैयारी हो तथा स्थानीय स्तर पर इसके माध्यम से अधिकाधिक किशोरों को जोड़ने एवं जुड़े हुए किशोरों को प्रेरित करने का प्रयास किया जाए। इससे यह कार्य और अधिक प्रभावी एवं व्यापक रूप से आगे बढ़ सकता है।''

(शेष पेज 9 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002** पर व्हाट्सअप अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

संक्षिप्त खबर

दाम्पत्य कार्यशाला का आयोजन

तिरुवन्नामलाई। कार्यक्रम की मंगल शुरुआत महिलामण्डल के मंगलाचरण से हुई। साध्वी श्री जी ने कहा हमारी दुनिया रिश्तो की दुनिया है, हर व्यक्ति डोर से बंधा हुआ है माता-पिता भाई -बहिन उसमें एक महत्त्वपूर्ण रिश्ता दम्पति का जो परिवार में सुख शांति वैभव का काम करता है। यह रिश्ता विवाह से जुड़ता है। वि - विश्वास वा -वादा ह - हाथ मिलाये साथ निभाए, अंगुलियां रिश्तों का रक्षा कवच है ! डॉ. साध्वी सरलयशा जी ने टोक शो के माध्यम से अपने विचार रखे सबमें नई खुशहाली भर दी।साध्वी ऋषि प्रभाजी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए दाम्पत्य जीवन खुशहाल बनाने के टिप्स बताये विवेक सेठिया, जितेन्द्र ने आभार ज्ञापन किया। तिरुणावले के सभी-भाई-बहनो ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। 25 बोल की रोचक प्रतियोगिता करवाई ज्ञान, दर्शन, चरित्र , तप , मोक्ष पांच टीमें करवाई गई बडे उत्साह के साथ सभी ने भाग लिया। भिक्षु को जानो पहचानो प्रश्न मंच का आयोजन विभिन्न राउण्ड से माध्यम से करवाई गई। लोगस्स कल्प अनुष्ठान का आयोजन हुआ साध्वी श्री जी में कहा लोगस्स को कलयुग का कल्पवृक्ष कहा जाता है।

सेवा कार्यक्रम

अहमदाबाद। तेरापंथ युवक परिषद् अहमदाबाद पूर्व सेवा संस्कार और संगठन के कई कार्यक्रम समय समय पर करती रहती है। भीषण गर्मी के इस मौसम में राहगीरों एवं स्थानीय नागरिकों को शीतल पेय वितरित कर जनसेवा का एक सराहनीय कार्य किया गया। अहमदाबाद के घोड़सर क्षेत्र में किया गया। इसके अंतर्गत 6000 गिलास का शीतल पेय पदार्थ का वितरण किया गया।

सात दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का आयोजन

सिरसा।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद द्वारा सीपीएस अकेडमी फॉर लीडरशिप एंड एक्सीलेंस के सहयोग से जूनियर एवं सीनियर ग्रुप के लिए सात दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग वर्कशॉप का सफल आयोजन किया गया।

सेठ सागरमल सुराणा जैन वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के अध्यापक एवं बच्चों के साथ साथ तेरापंथ समाज के श्रावकों ने प्रशिक्षण लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ABTYP पदाधिकारि पवन नौलखा द्वारा की गई। कार्यशाला में 55 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

सात दिनों तक चले इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों के व्यक्तित्व विकास, प्रभावी संवाद कौशल एवं आत्मविश्वास में वृद्धि करना था।

कार्यशाला के दौरान सीपीएस जोनल ट्रेनर सिमरन पोखराना, रजत संजय संचेती तथा प्रोविजनल नेशनल ट्रेनर खुशी कोठारी ने विभिन्न गतिविधियों, अभ्यास सत्रों एवं प्रेरणादायी मार्गदर्शन के माध्यम से प्रतिभागियों को मंच संचालन, प्रभावी व्यक्तित्व कला एवं आत्मविश्वासपूर्ण अभिव्यक्ति के गुर सिखाए।

इस अवसर पर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा सिरसा का सक्रिय सहयोग रहा। आयोजकों ने बताया कि इस प्रकार की कार्यशालाएं युवाओं एवं बच्चों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं तथा उन्हें भविष्य की चुनौतियों का आत्मविश्वास के साथ सामना करने के लिए तैयार करती हैं।

भिक्षु चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में 'तेरापंथ मेरा पंथ' कार्यशाला का आयोजन

कुर्ला।

तेरापंथ सभा भवन में शासन श्री साध्वी कंचनप्रभा जी, शासन श्री साध्वी मंजूरेखा जी आदि ठाणा ५ के सानिध्य में 'तेरापंथ मेरा पंथ' कार्यशाला का शुभारंभ नवकार महामंत्रोच्चार के पश्चात् कुर्ला तेरापंथ महिला मंडल ने मंगलाचरण किया। तेरापंथ सभाध्यक्ष ललित डांगरा ने समागत जनमेदिनी के स्वागत में विचार रखे। धर्म सभा को प्रेरणा प्रदान करते हुए शासन श्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा— जैन तत्वदर्शन, दान-दया, सांसारिक व लोकोत्तर व्यवहार को भगवान महावीर की वाणी के आधार पर जन-जन को गहराई से समझाया। उन्होंने कहा— गृहस्थ जीवन जीने वाला व्यक्ति पूर्ण अहिंसक नहीं बन सकता पर अपना दृष्टिकोण सही समझे। हिंसात्मक व्यवहारों को यथार्थ समझना आवश्यक है। शासन श्री साध्वी मंजूरेखा जी ने कहा तत्वज्ञान हमारा प्राण है। तत्वज्ञान आगमों का सार है। भगवान महावीर ने संवर निर्जरा का जो बोध दिया वह हमारी साधना का लक्ष्य है। आचार्य भिक्षु ने कहा पंचेन्द्रिय के पोषण के लिए अगर एकेन्द्रिय की हिंसा को हिंसा ही कहा जाता है। लौकिक दान तथा लोकोत्तर दान को व्याख्यायित करते हुए, तेरापंथ को प्रस्तुत किया तथा साध्य और साधन के बारे में बताया। श्राविका उपासिका आशा गुंदेचा ने आचार्य भिक्षु के सम्पूर्ण सिद्धान्तों पर अच्छी तरह विस्तार से प्रकाश डाला। संयोजकीय वक्तव्य के साथ राजकुमार चपलोत ने कार्यक्रम की शुरुआत की। महासभा के पूर्व मंत्री रमेश सुतरिया, मुंबई सभा अध्यक्ष माणक धींग, मुंबई सभा के पूर्व अध्यक्ष नरेन्द्र तातेड़, महिला मण्डल कुर्ला की पूर्व अध्यक्षा भावना डागलिया, आदि ने विचार रखे।विशेष हस्तीमल सुतरिया, ट्रस्ट अध्यक्ष सतीश महेता, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएं, महिला मण्डल संरक्षिका, सुरेश हिंगड़ ने अध्यक्षीय भाषण, विकास हिंगड़ ने आभार ज्ञापन किया। साध्वी वृन्द ने सुन्दर गीत से कार्यशाला में रंग भर दिया तथा तत्वज्ञान परक गीत ने एक सुन्दर माहौल प्रस्तुत किया।

आचार्य भिक्षु की संयम साधना अनुत्तर

सिरियारी।

आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान में प्रतिमाह की भांति आयोजित भिक्षु भक्ति कार्यक्रम मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' के निर्देशन में हुआ। इस अवसर पर ब्यावर से बाल कलाकार समृद्ध जैन ने अपनी सुमधुर संगीत की स्वर लहरियां प्रस्तुत की। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुनि अमनकुमार जी ने अपने सम्बोधन में कहा आचार्य भिक्षु की संयम साधना अनुत्तर थी। वे विरले ही संत थे जिन्होंने सदैव संयम को महत्त्व दिया। जिस भवन की नींव जितनी मजबूत होती है। वह भवन उतना ही ऊंचाई को प्राप्त हो सकता है। तेरापंथ धर्मसंघ की नींव में तप-त्याग और संयम का भाव भरा है। आचार्य भिक्षु का जीवन संयम से ओत प्रोत था। मुनि अमन कुमार जी ने बताया आचार्य भिक्षु की आचार निष्ठा, सिद्धान्तनिष्ठा, मर्यादानिष्ठा, संयमनिष्ठा, अनुशासननिष्ठा बेजोड़ थी। साधना के क्षेत्र में संयम सर्वोपरि होता है। संयमी व्यक्ति ही पूज्यता को प्राप्त हो सकता है। संयम के अभाव में समाज राष्ट्र और अन्तराष्ट्रीय स्तर पर शांति की स्थापना सम्भव नहीं अतः संयम से विश्व शांति की स्थापना हो सकती है। इस अवसर पर अहमदाबाद तेरापंथी सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष राकेश सिपानी का संस्थान की ओर से दुपट्टा मोमेन्टों प्रदान कर डा. बी. आर. शर्मा एवं व्यवस्थापक महावीरसिंह ने स्वागत अभिनंदन किया। बी. के. कल्याण, प्रकाश जैन, प्रवीण जैन, विजय जैन ने बाल कलाकार समृद्ध जैन को दुपट्टा व मोमेन्टों प्रदान कर स्वागत अभिनंदन किया।

मुनि आत्मानन्द जी की स्मृति में भावांजलि

सेवापरायण सन्त मुनिश्री आत्मानन्दजी

● मुनि मदन कुमार ●

परमपूज्य युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी का जन्म शताब्दी वर्ष का अप्रतिम अवसर ! ज्योतिपुंज आचार्य श्री महाश्रमणजी की अनुपम अनुकंपा से 43 दीक्षाओं का भव्य समारोह । मुनि श्री आत्मानन्दजी का भाग्योदय ! दीक्षा नया जन्म और नया प्रस्थान है। अच्छे भाग्य का निर्माण है। क्षयोपशम को प्रबल बनाने की साधना है। भिक्षु - शासन में दीक्षा होना महान अनुष्ठान है। जो शान्ति और समाधि साधु को मिलती है, वह गृहस्थ को कहां ? भगवान महावीर ने कहा - 'गृहवास क्लेश सहित है और मुनि जीवन क्लेश रहित। गृहवास बंधन है और मुनि जीवन मोक्ष। गृहवास सावद्य है और मुनि जीवन निरवद्य।' मुनि श्री आत्मानन्दजी 80 वर्ष की अवस्था में मुनि बने, यह उनका परम सौभाग्य था। ऐसा सुअवसर किसी बड़भागी को ही मिलता है। यह परमपावन आचार्य श्री महाश्रमणजी के शासन काल का एक कीर्तिमान है। परमपूज्य आचार्य श्री तुलसी के शासन काल में मुनि श्री अमृतानन्दजी को 73 वर्ष की अवस्था में दीक्षा प्रदान की गयी थी।

भगवान महावीर का साधनाकाल लगभग साढ़े बारह वर्ष रहा और मुनि श्री आत्मानन्दजी का साधना काल भी लगभग साढ़े बारह वर्ष का रहा । मुनि श्री आत्मानन्दजी सेवापरायण साधु थे। वे यौगलिक की तरह सरल आत्मा थे, अल्पोपाधि और अल्पाहारी थे। उनमें श्रम और सेवा के संस्कार गहरे थे। उनका सारा जीवन सेवा-धर्म से भावित रहा। जो श्रम और सेवा करता है, उसमें चुम्बकीय आकर्षण पैदा हो जाता है, फिर उसमें यदि सरलता और विनम्रता हो तो कहना ही क्या ? उनके बारे में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि वे एक अच्छे श्रावक थे और जीवन के संध्या काल में अच्छे साधु बन गये। वे मुख्य रूप से बोरावड़ और छापर में प्रवासी रहे और समाधिपूर्ण अपनी आत्माराधना करते रहे। योगक्षेम वर्ष में उन्हें परमाराध्य गुरुदेवश्री की पावन सन्निधि मिल गयी, यह उनका परम सौभाग्य था। वे जीवन के दसवें दशक में छापर सेवाकेन्द्र से पाद-विहार करते हुये लाडनूं - जैन विश्व भारती में पहुंचे और योगक्षेम वर्ष में संभागी बन गये। सन् 2014 में मुनिश्री आत्मानन्दजी श्रद्धेय मुनिश्री पृथ्वीराजजी स्वामी के साथ बोरावड़ में थे। मेरा (मुनि मदन कुमार) चतुर्मास उस वर्ष बोरावड़ में था। अच्छा योग बना। कई बार मुनिश्री आत्मानन्दजी मेरी वस्त्र-सिलाई कर लेते थे। इस तरह उनमें सेवा करने का बड़ा शौक था। वे दूर-दूर से पानी ले आते थे तथा कार्य में शक्ति का नियोजन करते थे। मुनि श्री आत्मानन्दजी का गृहस्थ नाम श्री इन्द्रचन्दजी डागा था। उनकी सेवा-वृत्ति से उन्हें महामना युगप्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञजी से 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' का अलंकरण प्राप्त हुआ था। उनका लिपि-कौशल अच्छा था, अद्भुत था। उनके सुन्दर अक्षर आश्चर्यन्वित करते थे। गृहस्थ जीवन में वे साधु-साध्वियों के साहित्यिक कार्य में बड़े सहयोगी रहे। शासनगौरव मुनिश्री बुद्धमल्लजी स्वामी आदि अनेक सन्तों के 'धारण' का कार्य निष्ठापूर्वक किया। उनका मुनि-जीवन प्रशस्त रहा। उनकी चाल द्रुत थी, शरीर हल्का था और मोह कर्म कम था, ऐसा लगता है। मोह कृश हो जाये, इससे बड़ी उपलब्धि क्या हो सकती है? शान्त सहवास और सौहार्दमय जीवन का मंत्र उनके पास था। मुनि श्री आत्मानन्दजी गुरु सन्निधि में 28 मई, 2026 को दिवंगत हो गये। वे परमपूज्य अष्टमाचार्य श्री कालूगणी के युग में जन्मे और परमपूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी के शासन काल में कार्य सिद्ध कर गये।

अभिनंदन समारोह का आयोजन

विजयनगर बैंगलोर।

जैन दीक्षा सांसारिक मोह माया त्याग कर आध्यात्मिक जीवन अपनाने की पवित्र प्रक्रिया है। इसी आध्यात्मिक पथ पर चलने को अग्रसर दीक्षार्थी बहन छापर निवासी मुमुक्षु सुमन बाई का तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर द्वारा अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से हुआ तत्पश्चात अध्यक्ष महिमा पटावरी ने दीक्षार्थी बहन का स्वागत अभिनंदन करते हुए उनके आध्यात्मिक जीवन में सतत् आगे बढ़ाने हेतु अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। दीक्षार्थी सुमन ने अपना संस्मरणों को साझा करते हुए बताया कि मुझे गुरुदेव की दृष्टि प्राप्त हुई और जब गुरु का हाथ हो तो कठिन से कठिन बाधाएं भी पार हो जाती है।

अणुव्रत, जीवन विज्ञान के माध्यम से बनती नैतिक, चारित्रिक स्वस्थ जीवन शैली

चेन्नई।

आर्य समाज फाउंडेशन, चेन्नई द्वारा डी.ए.वी. स्कूल, गोपालपुरम में आयोजित साप्ताहिक रविवार सत्संग कार्यक्रम में अणुव्रत समिति, चेन्नई ने सहभागिता निभाते हुए अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान विषयक प्रभावी प्रस्तुति दी। अणुव्रत समिति की अध्यक्षा सुभद्रा लुणावत ने अणुव्रत आंदोलन की जानकारी देते हुए समिति को कार्यक्रम में आमंत्रित कर अपनी प्रस्तुति देने का अवसर प्रदान करने के लिए आर्य समाज फाउंडेशन के प्रति आभार व्यक्त किया। समिति के उपाध्यक्ष डॉ. दिलीप धींग ने अपनी व्यंग्यात्मक कविता 'सौ चूहे खाकर बिल्ली चली हज को' का प्रभावशाली पाठ कर उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। जीवन विज्ञान प्रशिक्षक राकेश खांटेड ने जीवन विज्ञान (साइंस ऑफ लिविंग), योग एवं ध्वनि के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बचपन से नियमित योग, महाप्राण ध्वनि एवं ॐ के अभ्यास से शरीर और मन को स्वस्थ, प्रसन्न एवं ऊर्जावान रखा जा सकता है। उन्होंने बताया कि यह जीवनशैली अनेक शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं से बचाव में सहायक बनती है तथा बिना किसी दुष्प्रभाव के व्यक्ति को सक्रिय और सकारात्मक बनाए रखती है। कार्यक्रम का मंगलाचरण अणुव्रत समिति के सदस्यों द्वारा अणुव्रत गीत के माध्यम से किया गया। समिति के परामर्शक गौतमचंद सेठिया ने अणुव्रत आचार संहिता के ग्यारह नियमों की जानकारी देते हुए कहा कि अणुव्रत एक असांप्रदायिक नैतिक आंदोलन है, जो व्यक्ति के नैतिक जागरण, चरित्र निर्माण एवं अहिंसक चेतनायुक्त जीवनशैली के विकास पर बल देता है। स्कूल कमेटी मंत्री आचार्य विकास आर्य ने अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान के कार्यों की सराहना करते हुए भविष्य में भी संयुक्त रूप से विभिन्न जनजागरण कार्यक्रम आयोजित करने की इच्छा व्यक्त की। संयुक्त कार्यक्रम सुत्रधार श्रद्धा अर्गल ने संचालन किया।

मधुरम–मिठास अपनत्व की' कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में सीपीएस एकेडमी फॉर लीडरशिप एंड एक्सीलेंस द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'मधुरम – मिठास अपनत्व की' का प्रथम बार आयोजन तेरापंथ युवक परिषद्, विजयनगर द्वारा अर्हम भवन परिसर में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक संगान से हुआ। तत्पश्चात तेयुप सदस्यों द्वारा 'विजय गीत' प्रस्तुत किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन तेरापंथ भवन विजयनगर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्रीश्रीमाल ने किया। तेयुप विजयनगर अध्यक्ष विकास बाँठिया ने प्रशिक्षकों एवं उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया सूरत से पधारी राष्ट्रीय प्रशिक्षिका मनीषा सेठिया का परिचय जाह्नवी कावड़िया तथा अहमदाबाद से पधारे प्रशिक्षक दिनेश बुरड़ का परिचय वर्षा बैद ने कराया।

इस अवसर पर सभा विजयनगर अध्यक्ष भंवरलाल मांडोत, तेयुप विजयनगर शाखा प्रभारी आलोक छाजेड़, अणुविभा संगठन मंत्री राजेश चावत, अभातेमम सहमंत्री मधु कटारिया तथा टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत ने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की। सीपीएस एकेडमी के राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश मरोठी ने कार्यशाला की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वर्तमान समय में पारिवारिक एवं सामाजिक रिश्तों में मधुरता बनाए रखने हेतु इस प्रकार के प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने सीपीएस एकेडमी द्वारा विभिन्न सरकारी संस्थाओं के साथ संयुक्त रूप से संचालित कार्यक्रमों की भी जानकारी दी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अभातेयुप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं युवा गौरव विमल कटारिया ने अभातेयुप में सीपीएस की शुरुआत से लेकर वर्तमान सीपीएस एकेडमी की यात्रा का उल्लेख करते हुए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने परिवार में रिश्तों के महत्व पर प्रकाश डाला तथा तेयुप विजयनगर द्वारा स्वामित्व की भूमि क्रय करने पर परिषद् को बधाई दी। सीपीएस एकेडमी के मुख्य प्रशिक्षक अरविन्द मांडोत ने उदाहरणों के माध्यम से रिश्तों की अहमियत एवं पारस्परिक विश्वास की आवश्यकता पर प्रभावी प्रशिक्षण दिया।

राष्ट्रीय प्रशिक्षिका मनीषा सेठिया ने विभिन्न गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं के माध्यम से पारिवारिक सदस्यों के मध्य सामंजस्य, सहयोग एवं एकजुटता के महत्व को समझाया। पति-पत्नी के संबंधों में प्रेम, विश्वास एवं संवाद को सुदृढ़ बनाने हेतु अनेक रोचक टास्क करवाए। प्रशिक्षक दिनेश बुरड़ ने सास-बहू, ननद-भाभी सहित परिवार के अन्य रिश्तों में उत्पन्न होने वाले छोटे-छोटे मनमुटावों को दूर कर अपनत्व एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने के विषय में व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष पवन बैद ने किया तथा आभार ज्ञापन कार्यशाला संयोजक कैलाश नंगावत ने व्यक्त किया।

तुलसी गुरु के गुण गाएंगे...

● मुनि कमल कुमार ●

तुलसी गुरु के गुण गायेंगे
वर्षा दिन आज मनाएंगे ॥टेक॥

माता वदना के सुत प्यारे
झूमर कुल के थे उजियारे
जन जन को आज बताएंगे ॥१॥

कालू गुरु कर संयम पाया
सुश्रम कर जीवन सरसाया
कैसे हम उसे भुलाएंगे ॥२॥

संयम में जागरूक पल-पल
अध्ययन अध्यापन क्रम निर्मल
बलिहारी उनकी जाएंगे ।।३।।

तलस्पर्शी आगम ज्ञान किया
कालूगणी ने गणभार दिया
शासन का भाग्य सराएंगे ।।४।।

गण को नूतन आयाम दिये
कितने-कितने नव काम किये
कैसे उनको बिसरायेंगे ।।५।।

बाह्याभ्यन्तर व्यक्तित्व अजब
थी सूझ बूझ भी बड़ी गजब
पल-पल हम स्मृति मे लायेंगे ।।६।।

है शक्ति पीठ का पावन स्थल
श्रद्धालु को मिलता संबल
सबको ऐसा समझाएंगे ।।७।।

हम महाश्रमण गुरू आभारी
जिनकी करूणा सब पर भारी
सविनय हम शीश नमाएंगे ।।८।।

तुलसी-तुलसी नित स्मरण करो
पग-पग पर प्रतिपल विजय वरो
अन्तर मन से हम ध्याएंगे
तन्मय बन रटन लगाएंगे ।।९।।

तर्ज – ओम पार्श्व प्रभु

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
15 जून - 21 जून 2026

संबोधि

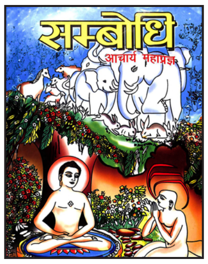

परिशिष्ट

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

अजपाजप– जिसमें मन का भी प्रयोग नहीं; जो स्वतः सतत होता है, उसका अनुभव करना। महर्षि पतंजलि ने ईश्वर का वाचक 'प्रणव' 'ॐ' कहा है। 'ॐ' मूल शब्द ध्वनि है। इसी से समग्र शास्त्रों का प्रणयन हुआ है। उसका अर्थयुत चिंतन करना जप है। क्रमशः उस 'ॐ' शब्द का जप छोड़कर उसके गुंजन को सुनना और अंत में सहज जो 'ॐ' की सतत धारा प्रवाहित हो रही है उसमें अपने को विलीन कर देना, अनाहत सुनना।

जप-विधि– मंत्र शक्तिशाली होता है। किन्तु उसकी शक्ति का उद्घाटन सम्यक् आचरण के बिना संभव नहीं होता। प्रत्येक वस्तु का विधिवत् उपयोग किया जाता है, अन्यथा वह उसके लिए इष्टकर नहीं होती। मंत्रों की विधिवत् आराधना न करने से अनेक दुर्घटनाएं भी घटित हो जाती हैं और वे मंत्र सहजतया सिद्ध भी नहीं होते। इसलिए आचार्यों ने मंत्राराधना की कुछ विधियां प्रयुक्त की हैं। जप के लिए चार बातें आवश्यक हैं-

(१) जप

(२) स्मरण

(३) विचिंतन

(४) ध्यान

जप– विधिपूर्वक मंत्र का अभ्यास। इसके लिए निम्नोक्त चार तथ्य मननीय हैं-

(१) मंत्र के अक्षरों का उच्चारण एक अक्षर दूसरे अक्षर के साथ संलग्न होना चाहिए तथा बीजाक्षरों के उच्चारण में ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत मात्राओं का ध्यान रखना चाहिए।

(२) मंत्र का उच्चारण जल्दी-जल्दी नहीं होना चाहिए।

(३) एक अक्षर व दूसरे के बीच बिलंब नहीं होना चाहिए।

(४) सुषुम्ना में जप करना चाहिए।

सूरिमंत्रकल्पसन्दोह के अनुसार जप-विधि इस प्रकार है–

१. चन्द्रनाड़ी द्वारा रेचन भावना-रागरूप लाल रंग की वायु का रेचन हो रहा है।

२. सूर्यनाड़ी द्वारा रेचन भावना-द्वेषरूप काले रंग की वायु का रेचन हो रहा है।

३. राग-द्वेष से मुक्त होकर चन्द्रनाड़ी द्वारा पूरक भावना-सतोगुणरूप श्वेत वायु नाभि में सम्यक् स्थापित हो रहा है।

४. होठ बन्द।

५. दांत ऊपर-नीचे अस्पृष्ट।

६. नासाग्र पर दृष्टि।

७. अंतर्जपरूप या अनाहतनादरूप स्मरण करना।

देवभद्रसूरि ने 'कथा रत्नकोष' में मंत्र स्मरण की विधि का निर्देश इस प्रकार दिया है–

१. आंखें निस्पन्द, नासाग्र दृष्टि।

२. केवल कुंभक ।

३. इन्द्रिय-प्रत्याहार।

४. अनाहत नाद में लग्न स्मरण करना।

५. प्रत्येक अक्षर को चन्द्रकला से युक्त कर उसमें से झरते अमृत-प्रवाह का चिंतन करना।

६. उस अमृत-प्रवाह से तीनों लोकों का दुःख-दावानल शांत हो गया है।

७. मंत्राक्षरों का लाखों सूर्यों से भी अधिक तेजस्वी चिंतन।

८. मंत्र के प्रभाव से विघ्नकारक भूतादि गण दूर हो गए हैं-चिंतन करें।

मंत्र-शास्त्रों में तीन प्रकार के करण का उल्लेख है, जो जप की सफलता में सहयोगी है। दिव्यकरण उसमें महत्त्वपूर्ण है। (१) कुंभकरण (२) दिव्यकरण (३) ऊध्वरचनकरण। साधक योग व्यापार (क्रिया) और करण से युक्त न हो तो मंत्रोच्चार का कोई मूल्य नहीं। करण में रेचन आदि करणों का समावेश होता है।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

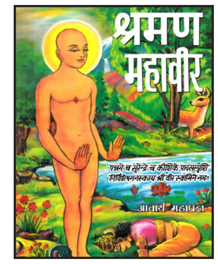

मुक्त मानस : मुक्तद्वार

मन अशांत होता है, तब हम धर्म की ओर झांकते हैं। मन की अशांति मिटाने के लिए हम धर्म की ओर ही झांकते है, धन की ओर नहीं झांकते। यह क्यों? इसका हेतु निश्चित नियम है। धर्म की अनुभूति से मन की अशांति मिट जाती है, हर देश में और हर काल में। यह नियम देश और काल से बाधित नहीं है इसलिए यह सत्य है।

सत्य एक रूप होता है। यह श्रमणों का सत्य और यह वैदिकों का सत्य-यह भेद नहीं हो सकता। वैदिक धर्म और श्रमण धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म-ये धर्म-संस्थान हैं, धर्म के तंत्र हैं, धर्म नहीं है। ये धर्म नहीं हैं, इसलिए अनेक हो सकते हैं, भिन्न और परस्पर विरोधी भी। ये सत्य को शब्द के माध्यम से पकड़ने का प्रयत्न करते हैं, जैसे एक शिशु तालाब में पड़ने वाले सूर्य के प्रतिबिम्ब को पकड़ने का प्रयत्न करता है।

एक आदमी कमरे में बैठा है। द्वार बन्द है। एक छोटी-सी खिड़की खुली है। उस पर जाली लगी हुई है। यह सच है कि आदमी खिड़की से झांककर आकाश को देख सकता है। किंतु यह भी इतना ही सच है कि वह सम्पूर्ण आकाश को नहीं देख सकता। आकाश उतना ही नहीं है जितना वह देख सकता है और यह भी सच है कि वह आकाश को सीधा नहीं देख सकता, जाली के व्यवधान से देख सकता है।

भगवान महावीर ने एक बार गौतम से कहा- 'जब धर्म का द्रष्टा नहीं होता तब धर्म अनुमान की जाली से ढंकी हुई शब्द की खिड़की से झांककर देखा जाता है। उस स्थिति में उसके अनेक मार्ग और अनेक मार्ग-दर्शक हो जाते हैं। गौतम ! तुम्हें जो मार्ग मिला है, वह द्रष्टा बनने का मार्ग है। तुम जागरूक रहो और धर्म के द्रष्टा बनो।'

भगवान महावीर धर्म के द्रष्टा थे। वे अचेतन में अचेतन धर्म को देखते थे और चेतन में चेतन धर्म को। वे यथार्थवादी थे। भय, प्रलोभन या अतिशयोक्तिपूर्ण प्रतिपादन उन्हें प्रिय नहीं था।

आचार्य हेमचन्द्र ने लिखा है- 'भगवन्! आपने यथार्थ तत्त्व का प्रतिपादन किया, इसलिए आपके व्यक्तित्व में वह कौशल प्रकट नहीं हुआ, जो घोड़े के सींग उगाने वाले नव-पंडित के व्यक्तित्व में प्रकट हुआ है।'

अनेकांत दृष्टि और यथार्थवाद-ये दोनों साथ-साथ चलते हैं। जो अनेकांत दृष्टि वाला नहीं होता, वह यथार्थवादी नहीं हो सकता और जो यथार्थवादी नहीं होता, वह अनेकांत दृष्टि वाला नहीं हो सकता। भगवान महावीर में अनेकांत दृष्टि और यथार्थवाद-दोनों पूर्ण विकसित थे। इसलिए वे सत्य को संघीय क्षितिज के पार भी देखते थे।

१. एक बार भगवान कौशाम्बी से विहार कर राजगृह आए और गुणशीलक चैत्य में ठहरे। गौतम स्वामी भिक्षा के लिए नगर में गए। उन्होंने जन-प्रवाद सुना-तुंगिका नगरी के बाहरी भाग में पुष्पवती नाम का चैत्य है। वहां भगवान पार्श्व के शिष्य आए हुए हैं। कुछ उपासक उनके पास गए और कुछ प्रश्न पूछे। जन-जन के मुंह से यह बात सुन गौतम के मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई। उन्होंने उपासकों से पूछा- 'बताओ, तुमने क्या प्रश्न किए और पार्वापत्यीय श्रमणों ने क्या उत्तर दिए?'

हमने उनसे पूछा– 'भन्ते! संयम का क्या फल है? तप का क्या फल है?'

पार्श्वपत्यीय श्रमणों ने उत्तर दिया– 'संयम का फल नए बन्धन का निरोध है। तप का फल पूर्व बंधन का विमोचन है।'

इस पर हमने पूछा– 'भन्ते! संयम का फल नए बंधन का निरोध और तप का फल पूर्व बंधन का विमोचन है तब फिर देवलोक में उत्पन्न होने का हेतु क्या है?'

इस प्रश्न के उत्तर में स्थविर कालियपुत्त ने कहा- 'आर्यो! जीव पूर्व तप से देवलोक में उत्पन्न होते हैं।'

स्थविर मेहिल ने कहा– 'आर्यो! जीव पूर्व संयम से देवलोक में उत्पन्न होते हैं।

स्थविर आनंदरक्षित ने कहा– 'आर्यो ! शेष कर्मों से जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं।'

स्थविर काश्यप ने कहा- 'आर्यो! आसक्ति क्षीण न होने के कारण जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं।'

गौतम इन प्रश्नोत्तरों का विवरण प्राप्त कर भगवान् के पास पहुंचे।

(क्रमशः)

3 बातें ज्ञान की

– आचार्यश्री महाश्रमण

तीन योग

आर्हत् वाङ्मय में बत्तीस आगम हैं, जो जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के द्वारा सम्मत हैं। बत्तीस आगमों का एक समूह है। उसमें कई वर्गीकरण हैं। पहले वर्गीकरण में ग्यारह अंग आगम हैं। दूसरे वर्गीकरण में बारह उपांग आगम हैं। तीसरे वर्गीकरण में चार मूल आगम हैं। चौथे वर्गीकरण में चार छेद आगम हैं और पांचवें वर्गीकरण में एक आवश्यक सूत्र है। बत्तीस आगमों में ग्यारह अंगों का ऊंचा स्थान है। इन ग्यारह अंगों को स्वतः प्रमाण के रूप में माना गया है। तीसरा अंग आगम है ठाणं। इसमें दस अध्याय (दस स्थान) हैं।

ठाणं के तीसरे अध्याय में कहा गया है– **तिविहे जोगे पण्णत्ते, तं जहा-मणजोगे, वइजोगे, कायजोगे।** 3/13

योग तीन प्रकार का होता है-

1. मनोयोग
2. वचनयोग
3. काययोग

योग शब्द का एक विशेष अर्थ है। शरीर, वाणी और मन की प्रवृत्ति योग है। शरीर की प्रवृत्ति काययोग है, वाणी की प्रवृत्ति वचनयोग है और मन की प्रवृत्ति मनयोग है। चौदहवें गुणस्थान में आदमी योग से रहित होता है। जैन वाङ्मय में साधना की चौदह सीढ़ियां हैं। चौदहवीं सीढ़ी अंतिम सीढ़ी है। उसके बाद मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। यद्यपि चौदहवीं सीढ़ी वर्तमान में यहां से प्राप्त नहीं हो सकती। यहां से तो अभी आदमी सातवीं सीढ़ी से ऊपर नहीं जा सकता। चौदह में से आधी सीढ़ियां अभी खुली हैं। अगली सात सीढ़ियां अभी बंद हैं। आठवीं सीढ़ी पर यहां कोई साधु-साध्वी नहीं चढ़ सकते। ज्यादा से ज्यादा सात सीढ़ी चढ़ सकते हैं। चौदहवीं सीढ़ी में जो साधक पहुंच जाता है, वह योग रहित यानी अयोगी बन जाता है। वहां न मन की प्रवृत्ति होती है, न वचन की प्रवृत्ति होती है, न शरीर की प्रवत्ति होती है। वहां पूर्णतया अयोग अवस्था होती है। हम तो सभी अभी योगी हैं। केवल साधु ही नहीं, श्रावक ही नहीं, सामान्य आदमी भी योगी है। एक चींटी भी योगी है। एक मकोड़ा भी योगी है। वनस्पतिकाय के जीव भी योगी हैं। यहां प्रश्न हो सकता है कि वे कौनसे योगी हैं? वे प्रवृत्ति वाले योगी हैं अर्थात् जिसके योग है, वह योगी है।

योग शब्द का एक अर्थ साधनापरक भी होता है। आचार्य हेमचंद्र ने 'अभिधान चिंतामणि' में योग शब्द का अर्थ मोक्ष का उपाय किया है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र भी योग है। मैं जिस आगम (ठाणं) की व्याख्या कर रहा हूं, वहां यह व्याख्या नहीं है। वहां मन, वचन, काया की प्रवृत्ति को योग कहा गया है। योग दो प्रकार का होता है-शुभ योग और अशुभ योग। दूसरे शब्दों में इन्हें निरवद्य योग और सावद्य योग कहा जा सकता है। गृहस्थ सामायिक करते हैं, उसमें सावद्य योग का प्रत्याख्यान किया जाता है, किन्तु निरवद्य योग का त्याग नहीं होता। जब हम साधुत्व स्वीकार करते हैं, तब हमें जीवनभर के लिए सर्व सावद्य योग का त्याग कराया जाता है, किन्तु निरवद्य योग का नहीं। साधु बनने के बाद किसी ने उपवास आदि कर लिया तो वह निरवद्य योग का भी त्याग हो गया। सिद्धान्ततया साधु का तो खाना भी धर्म है, पीना भी धर्म है, बैठना आदि भी धर्म है यानी साधु की तो हर क्रिया धर्मयुक्त होती है। कोई साधु खाने-पीने का त्याग करता है तो वह निरवद्य योग का त्याग करता है यानी वह साधना में और ज्यादा आगे बढ़ने का संकल्प लेता है।

आगम में बताया गया है कि एक समय में एक ही योग होता है। एक समय में दो योग नहीं हो सकते। हमारी चेतना या तो चिंतन आदि में लगेगी या बोलने में लगेगी या शरीर की चेष्टा में लगेगी। यह तो थोड़ी-सी सूक्ष्म बात है। तीनों ही योग शुभ भी हो सकते हैं और अशुभ भी हो सकते हैं। मन के द्वारा आदमी हिंसा का चिंतन करे, झूठ बोलने, चोरी करने, किसी को दुःख देने का सोचे, किसी के बारे में अनिष्ट कामना करे, मन में गुस्सा करे, यह अशुभ मनोयोग हो गया। शब्दों में गुस्सा कर लिया, गालियां दीं, किसी को डांटा-फटकारा, यह अशुभ वचनयोग हो गया। किसी के थप्पड़ लगा दी, लाठी की मार दी, यह अशुभ काययोग हो गया।

मन में अर्हतों की भक्ति करना, देव, गुरु, धर्म के प्रति श्रद्धा का भाव रखना, आत्मचिंतन करना, आत्म-कल्याण के बारे में विचार करना, दूसरों के आध्यात्मिक विकास की कामना करना, यह सारा शुभ मनोयोग हो गया। वाणी से नवकार मंत्र का जप करना, भक्ति गीत गाना, प्रभु की स्तुति करना, अर्हतों की वाणी का स्वाध्याय करना, यह शुभ वचनयोग हो गया। शरीर से साधु को वंदन करना, शुद्ध दान देना, साधु के द्वारा साधु की शारीरिक सेवा करना, यह शुभ काययोग हो गया।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com
पर ई-मेल अथवा 8905995002
पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभाओं के समाचार

दक्षिण मुंबई

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दक्षिण मुंबई की वार्षिक साधारण सभा AGM अध्यक्ष सुरेश डागलिया की उपस्थिति में महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल तुलसी सभागार में आयोजित हुई, शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन मुंबई सभा के पूर्व अध्यक्ष भंवरलाल कर्णावट ने किया स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष सुरेश डागलिया ने किया अपने दो वर्षीय कार्यकाल की जानकारी दी सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम संगठन यात्रा का रहा जिसमें 178 परिवार में हुई दौ वर्ष के कार्यकाल 2024 में मुनि कुलदीप कुमारजी का 2025 में शासन श्री साध्वी शिवमाला जी का चार्तुमास मिला। पूरी टीम का आभार व्यक्त किया मंत्री दिनेश धाकड़ ने मंत्री प्रतिवेदन का विस्तार से उल्लेख किया दो साल के कार्य काल जिसमें सभी संघीय कार्यक्रम कार्यशाला गुरु दर्शन यात्रा सूरत एवं अहमदाबाद की सफलतम रही तेरापंथी सभा के आजीवन मेंबर बनाए सभी की जानकारी दी। आय व्यय का ब्यौरा उपाध्यक्ष नितेश धाकड़ ने प्रस्तुत किया ऑडिटर की नियुक्ति की कार्यकर्ता की विशेष सेवा के लिए सम्मान किया । फाउंडेशन के अध्यक्ष कुंदनमल धाकड़ कार्य अध्यक्ष गणपत डागलिया, युवक परिषद अध्यक्ष गिरीश सिसोदिया, महिला मंडल की अध्यक्ष लतिका, अणुव्रत समिति से नरेंद्र मुणोत परिवार से हुलास बेन आदि ने शुभकामना प्रेषित की। सभा अध्यक्ष ने अपनी टीम को निरस्त किया। चुनाव अधिकारी ने वर्ष 2026/2028 के लिए देवेंद्र डागलिया को अध्यक्ष घोषित किया सभी ने ओम अर्हम की ध्वनि खुशी प्रकट की।

कोयंबतूर

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी सिद्धप्रभा जी ठाणा -४ के सानिध्य में तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथी सभा, तिरुप्पुर के शपथ ग्रहण समारोह का सामूहिक आयोजन कोयंबतूर सभा भवन में आयोजित हुआ। नवनिर्वाचित ते यु प अध्यक्ष मोहित बरडिया को अ.भा.ते.यु.प कार्यकारिणी सदस्य सोनु डागा ने शपथ दिलाई तदुपरांत अध्यक्ष ने अपनी नव गठित कमेटी को शपथ ग्रहण दिलवाई। साध्वी सिद्ध प्रभा जी ने युवा शक्ति का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि 'युवा' समाज के सशक्त सेनानी है। गुरु इंगित की आराधना एवं अनुशासना का अनुपालन करते हुए युवाओं को संघ, समाज एवं राष्ट्र के दायित्वों के निर्वहन हेतु सदैव तत्पर रहना चाहिए। कोयंबतूर सभा अध्यक्ष धनराज सेठिया एवं तमिलनाडु आंचलिक प्रभारी राजकुमार गिरिया ने नव निर्वाचित अध्यक्षों को शुभकामनाएं प्रेषित की।

शपथ ग्रहण कार्यक्रम व समारोह का संचालन संस्कारक निर्मल बेगवानी द्वारा संपन्न हुआ।

सेलम

कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र, विजय गीत एवं श्रावक निष्ठा पत्र के साथ हुआ। अध्यक्ष नवीन डूंगरवाल ने अपने कार्यकाल के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों, चरित्र आत्माओं के साथ रास्ते की सेवा, धम्म जागरण एवं अन्य अनेक सेवा कार्यों की जानकारी देते हुए सभी इंचार्ज एवं तेयुप कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया। मंत्री प्रजीत बोथरा ने पूरे वर्ष संपन्न हुए कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया तथा आभा तेयुप के निर्देशन में संचालित कार्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं के सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

कोषाध्यक्ष विनीत नाहटा ने वर्षभर के आय-व्यय का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया एवं सभी प्रायोजकों (Sponsors) के प्रति आभार व्यक्त किया। इसके पश्चात चुनाव प्रक्रिया के अंतर्गत चुनाव आयुक्त प्रशांत लूंकड़ एवं अशोक चोपड़ा ने सर्वसम्मति से भरत चोपड़ा को तेयुप सेलम के नए अध्यक्ष के रूप में घोषित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रजीत बोथरा ने किया तथा आभार ज्ञापन संदीप सुराना द्वारा किया गया।

गांधीनगर बैंगलोर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा गांधीनगर बैंगलोर की वार्षिक साधारण सभा,सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली की अध्यक्षता में आयोजित हुई। नमस्कार महामंत्र से अधिवेशन का शुभारंभ हुआ। सभा गीत का संगान सुरेश कोठारी एवं ललित सेठिया ने किया। अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने अपने वक्तव्य में सभी का स्वागत किया। सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने सभा द्वारा दो वर्षों में कृत कार्यों का सम्पूर्ण ब्यौरा प्रतिवेदन के माध्यम से दिया,कोषाध्यक्ष प्रकाश कटारिया ने आय व्यय प्रस्तुत किया सभी ने सर्व सम्मति से पास किया। तत्पश्चात मुख्य चुनाव अधिकारी रमेश कोठारी एवं सह चुनाव अधिकारी जयंतीलाल बोहरा ने प्रकाश बाबेल को सन 2026-2028 हेतु श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा, गांधीनगर बैंगलोर के अध्यक्ष के रूप में घोषित किया। महासभा से उपाध्यक्ष प्रकाश लोढ़ा,युवा गौरव मूलचंद नाहरआदि की उपस्थिति रही।साधारण सत्र का कुशल संचालन विनोद छाजेड़ ने एवं द्वितीय चरण का संचालन नवनीत मुथा ने किया ।

राजाजीनगर

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा ट्रस्ट, राजाजीनगर की कार्यकाल 2024-26 की वार्षिक साधारण सभा का आयोजन तेरापंथ भवन, राजाजीनगर में सहर्ष सम्पन्न हुआ। अध्यक्ष अशोक चौधरी की अध्यक्षता में नमस्कार महामंत्र के सामूहिक मंगलाचरण के साथ सभा का शुभारंभ हुआ। परामर्शक माणेकचंद मुथा द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया। सभा गीत की प्रस्तुति सतीश पोरवाड़ एवं अशोक चौधरी द्वारा दी गई। सहमंत्री सतीश पोरवाड़ ने गत वर्ष की साधारण सभा की कार्यवाही का वाचन कर सदन से अनुमोदन करवाया। मंत्री चंद्रेश मांडोत ने वर्ष 2025-26 का वार्षिक मंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए केंद्र द्वारा निर्देशित सभी आयामों, चरित्र आत्माओं की सेवा, साधार्मिक सेवा एवं विविध आयोजित कार्यों की विस्तृत जानकारी प्रदान की।कोषाध्यक्ष हंसराज चौधरी ने वर्ष 2025-26 का अंकेक्षित आय-व्यय विवरण_ प्रस्तुत किया। दोनों प्रतिवेदनों को सदन ने ॐ अर्हम् के उद्घोष के साथ सहज रूप से पारित किया। अंत में अध्यक्ष अशोक चौधरी ने कार्यकाल 2024-26 को समाप्त घोषित किया एवं मंच चुनाव अधिकारी जुगराज श्रीश्रीमाल को सुपुर्द किया गया। तत्पश्चात् मदनलाल बोराणा को सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद हेतु मनोनीत किया गया। मंच संचालन मंत्री चंद्रेश मांडोत ने किया।

टी. दासरहल्ली

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, टी. दासरहल्ली का वर्ष 2024-26 का वार्षिक अधिवेशन तेरापंथ सभा भवन, टी. दासरहल्ली में उत्साह एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के दौरान सभा मंत्री प्रवीण बोहरा द्वारा वर्ष 2024-26 की गतिविधियों एवं उपलब्धियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया तथा कोषाध्यक्ष रमेश बाबेल द्वारा आय-व्यय का लेखा-जोखा सदन के समक्ष रखा गया, जिसे सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया। अधिवेशन में वर्ष 2026-28 के मनोनयन हेतु चुनाव अधिकारी राकेश दक एवं सह चुनाव अधिकारी अनिल गादिया द्वारा भगवतीलाल मांडोत को श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा, टी. दासरहल्ली का सर्वसम्मति से अध्यक्ष चयनित किया गया। उनके चयन की घोषणा होते ही सभा भवन ॐ अर्हम से गूंज उठा तथा उपस्थित सदस्यों ने उन्हें शुभकामनाएं एवं बधाइयाँ प्रदान कीं। नवनिर्वाचित अध्यक्ष भगवतीलाल मांडोत ने अपने संबोधन में सभा के प्रति आभार व्यक्त संचालन सभा मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया।

दिल्ली

बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी स्वामी एवं मुनि जयकुमार जी एवं दो मुनि अभिजीत कुमार जी आदि ठाणा-८ के सान्निध्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दिल्ली के नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं उनकी कार्यकारिणी टीम का शपथ ग्रहण समारोह शुक्रवार को कीर्ति नगर स्थित इनोवेटिव बैंक्वेट हॉल में अत्यंत गरिमापूर्ण और उमंग के वातावरण में संपन्न हुआ। इसी भव्य आयोजन के साथ केंद्रीय सभा के अतिरिक्त तीन क्षेत्रीय सभाओं—पीतमपुरा सभा, मानसरोवर गार्डन सभा और कीर्ति नगर सभा के भी अध्यक्ष एवं अन्य पदाधिकारियों का भी शपथ ग्रहण संपन्न हुआ। समारोह में उपस्थित विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी ने विशेष उद्बोधन में फरमाया-'पद कोई अधिकार नहीं, बल्कि समाज की उन्नति के लिए मिला एक पवित्र अवसर है। जब हम 'मैं' और 'मेरा' की भावना से ऊपर उठकर काम करते हैं, तभी संगठन में सच्ची आत्मिक शक्ति का संचार होता है। नई टीम पूरी ऊर्जा, आपसी सद्भाव और समर्पण के साथ सिर्फ और सिर्फ समाज कल्याण को अपना लक्ष्य बनाए। आचार्यश्री के सिद्धांतों को जीवन में उतारकर किया गया कार्य ही समाज को असली प्रगति की ओर ले जाएगा। इसी क्रम में मुनि जय कुमार जी ने मार्गदर्शन देते हुए कहा कि किसी भी संस्था की नींव उसके कार्यकर्ताओं के आपसी तालमेल और विनम्र व्यवहार पर टिकी होती है, नई टीम इसे हमेशा याद रखे। वहीं डॉ. मुनि अभिजित कुमार जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि कार्यों में पारदर्शिता और नई सोच का समावेश ही संगठन को समय के साथ मजबूत और प्रासंगिक बनाए रखता है। इस पावन माहौल में नवनिर्वाचित अध्यक्ष विमल कुमार बैंगानी और महामंत्री प्रदीप संचेती ने अपनी पूरी टीम के साथ धर्मसंघ की मर्यादाओं के तहत निस्वार्थ भाव से समाज सेवा करने की विधिवत शपथ ली। साथ ही तीनों क्षेत्रीय सभाओं के नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने भी अपने दायित्वों को निष्ठापूर्वक निभाने का संकल्प लिया।

चेन्नई

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, किलपाक, चेन्नई का प्रथम वार्षिक अधिवेशन तेरापंथ जैन विद्यालय, पट्टालम में रविवार को आयोजित हुआ। नमस्कार महामंत्र सामुहिक समुच्चारण के साथ कार्यवाही का शुभारंभ हुआ। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन सहमंत्री विकास सेठिया ने किया। अध्यक्ष अशोक परमार ने स्वागत स्वर प्रस्तुत करते हुए अपने कार्यकाल में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष मिले सभी पदाधिकारीगण, सदस्यगण, समाज के उदारमना महानुभावों के तन-मन-धन के सहयोग, समर्थन के लिए साधुवाद सम्प्रेषित किया। मंत्री विजय सुराणा ने मंत्री प्रतिवेदन, कोषाध्यक्ष इन्दरचन्द बोथरा ने आय-व्यय ब्योरा सदन में प्रस्तुत किया। जिसे सर्वसम्मति से ओम अर्हम् की ध्वनि से पास किया। इस कार्यकाल अवधि के दौरान दिवंगत श्रावक- श्राविकाओं, सभा सदस्यों को श्रद्धांजलि स्वरूप लोगस्स पाठ का ध्यान किया गया। अधिवेशन की चुनावी कार्यवाही के लिए चुनाव अधिकारी गौतमचन्द डागा, सहअधिकारी प्रसन्न बोथरा को मंच सौपा गया। चुनाव अधिकारी ने प्राप्त नामांकन पत्र एक ही व्यक्ति के मिलने की जानकारी देते हुए, आगामी दो वर्षीय 2026-2028 कार्यकाल के लिए पुनः अशोक परमार को अध्यक्ष पद के निर्वाचन की घोषणा करते हुए दायित्व पत्र प्रदान किया। अशोक परमार ने पुनः सदन द्वारा विशिष्ट विश्वास के साथ दायित्व सौंपने पर साधुवाद देते हुए नवीन तेरापंथ भवन व अन्य कार्यों के लिए सभी के सहयोग का आह्वान किया। विकास सेठिया ने आभार ज्ञापन दिया।

तेरापंथ किशोर मंडल के 21वें अधिवेशन में द्वितीय पुरस्कार

श्रीडूंगरगढ़।

लाडनूं में आयोजित तेरापंथ किशोर मंडल के 21वें अधिवेशन 'GENZ Conclave' में देशभर से लगभग 500 किशोरों ने सहभागिता की। इस राष्ट्रीय आयोजन में श्रीडूंगरगढ़ से संयोजक मुदित पुगालिया के नेतृत्व में पीयूष पुगालिया, हर्षित गोलछा, वीरेंद्र गिया, ऋषभ झाबक एवं अजय बोथरा ने भाग लेकर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया।

पृष्ठ 1 का शेष

बीमारी और मौत तो..

१. मोक्ष ही है अंतिम दुःख-मुक्ति : जैसे पाप और आश्रव दुःख के कारण हैं, वैसे ही नव-तत्वों का अंतिम नवां तत्व यानी मोक्ष स्वयं में संपूर्ण दुःख-मुक्ति (परम सुख) का कार्य है। इस मोक्ष रूपी कार्य को सिद्ध करने वाले दो ही सबसे बड़े कारण हैं—संवर (कर्मों के आने को रोकना) और निर्जरा (पुराने कर्मों को तपाकर नष्ट करना)।

२. संन्यास से कटेगा बंधन : इस दुनिया के तमाम झंझटों और कष्टों से स्थाई रूप से छुटकारा दिलाने वाला एकमात्र तत्व शुद्ध धर्म है। संन्यास और साधुत्व की उत्कृष्ट साधना ही दुःख-मुक्ति का एकमात्र अमोघ उपाय है। हमें जो ज्ञान, दर्शन और चारित्र रूपी अध्यात्म का राजमार्ग मिला है, उस पर दृढ़ता से आगे बढ़ते रहने से ही मोक्ष की प्राप्ति संभव है।

मंगल प्रवचन के संपन्न होने पर पूज्य प्रवर आचार्यश्री ने सुधर्मा सभा में उपस्थित चारित्रात्माओं द्वारा संघ मर्यादा, तत्व-ज्ञान और चर्या के संदर्भ में प्रस्तुत की गई गहन जिज्ञासाओं को अपनी अमृत वाणी से समाहित किया।

मलमय काया को चमकाना

२. उत्पत्ति और स्वभाव से अशुचि : यह स्थूल शरीर भीतर से अशुचि और अपवित्र है। बाहर की गंदगी को तो वस्त्रों या जल से छुपाया जा सकता है, पर भीतर की मलमय गंदगी से दुराव असंभव है। ये गंदगियाँ पुद्गल हैं, इनके प्रति राग-द्वेष नहीं रखना ही सच्ची साधना है।

३. क्लेशों का घर : यह काया शारीरिक दुखों, बीमारियों और मानसिक कठिनाइयों का पात्र है। इस नश्वर देह को चलाने के लिए मनुष्य को निरंतर मानसिक व शारीरिक परिश्रम की भट्टी में तपना पड़ता है।

श्रृंगार 'विष' के समान, पर मोक्ष का यही है द्वारः पूज्य प्रवर ने चारित्रात्माओं और श्रावकों को काया के सदुपयोग का महामंत्र दिया।

१. विभूषा से बचें चारित्रात्माएं : इस अनित्य शरीर को सजाने, संवारने और चमकाने वाली बाह्य चीजें बिल्कुल 'ताल पुट विष' (धीमे जहर) के समान हैं। अतः साधु को श्रृंगार, वस्त्र-विभूषा और संसार के तमाम बाह्य आकर्षणों से सदैव बचकर रहना चाहिए।

२. पोषण केवल साधना के लिए : इस शरीर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि मलमय और अशुचि होने के बावजूद, परम पद (मोक्ष) की प्राप्ति केवल इसी मानव शरीर के माध्यम से की जा सकती है। इसी काया को धारण करके अनंत संत और श्रावक आत्म-कल्याण का मार्ग तय करते हैं।

३. काया से उठाएं आध्यात्मिक लाभ : जैन मुनि इस शरीर का पोषण स्वाद या आसक्ति के लिए नहीं, बल्कि केवल इसीलिए करते हैं ताकि इसके माध्यम से मोक्ष की साधना निर्बाध चलती रहे। अतः हमें इस अनित्य शरीर की शक्ति का उपयोग केवल तपस्या, साधना और आत्म-कल्याण में ही करना चाहिए। मंगल प्रवचन के संपन्न होने पर पूज्य प्रवर आचार्यश्री ने उपस्थित चारित्रात्माओं द्वारा संघ मर्यादा और आचार-संहिता को लेकर प्रस्तुत की गई तात्विक शंकाओं व जिज्ञासाओं का आगम के आलोक में सहज समाधान कर सबको कृतार्थ किया।

पृष्ठ 3 का शेष

तेरापंथ किशोर मंडल का 21वां राष्ट्रीय सम्मेलन...

मुनि नयकुमारजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि आप सभी का सौभाग्य है कि आप सभी किशोर तेरापंथ किशोर मंडल से जुड़े हैं तथा हमें आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महान गुरु का सान्निध्य प्राप्त है। उन्होंने कहा कि गुरु इंगित की आराधना करते हुए निरंतर आगे बढ़ना चाहिए तथा तेरापंथ धर्मसंघ के प्रत्येक कार्य को ऐतिहासिक स्वरूप प्रदान करने का संकल्प लेना चाहिए।

कार्यक्रम में अभातेयुप उपाध्यक्ष प्रथम अनंत बागरेचा, उपाध्यक्ष द्वितीय अभिनंदन नाहटा, महामंत्री सौरभ पटावरी, सहमंत्री द्वितीय अंकुर लूनिया, संगठन मंत्री रोहित कोठारी, कोषाध्यक्ष विकास बोथरा एवं राष्ट्रीय अधिवेशन के सह-संयोजक कमलेश भंसाली ने भी अपने प्रेरक विचार व्यक्त किए।

मंचीय कार्यक्रम के उपरांत Terapanth's Got Talent एवं TKM Excellence Lab का शुभारंभ किया गया, जिसमें किशोरों ने अपनी विविध प्रतिभाओं एवं रचनात्मक क्षमताओं का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

इसके पश्चात तेरापंथ किशोर मंडल के राष्ट्रीय सह-प्रभारी बजरंग कुंडलिया एवं श्रेणिक कुचेरिया द्वारा आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। उन्होंने आचार्य श्री महाश्रमणजी, संत-सन्निधि, अभातेयुप, आयोजन समिति, समस्त पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं देशभर से पधारे प्रतिभागियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

अंत में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं, गतिविधियों एवं वर्षभर के उत्कृष्ट कार्यों के लिए किशोरों, तेरापंथ किशोर मंडल शाखाओं एवं प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया।

सदस्य संख्या के आधार पर किये गये विशेष कार्यों के मूल्यांकन के अनुसार सर्वश्रेष्ठ तेरापंथ किशोर मंडल निम्न प्रकार रहे-

सदस्य संख्या 1 से 25 - तेरापंथ किशोर मंडल, फरीदाबाद

सदस्य संख्या 25 से 75 - तेरापंथ किशोर मंडल, बालोतरा

सदस्य संख्या 75 से अधिक - तेरापंथ किशोर मंडल, अहमदाबाद एवं हैदराबाद (संयुक्त)

तीन दिवसीय GENZ Conclave 2026 अध्यात्म, संस्कार, सेवा, नेतृत्व, नवाचार एवं व्यक्तित्व निर्माण का एक अद्भुत संगम सिद्ध हुआ।

यह राष्ट्रीय अधिवेशन देशभर से आए किशोरों के लिए प्रेरणा, सीख, प्रतिभा प्रदर्शन एवं आत्मविकास का एक अविस्मरणीय मंच बनकर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। विभिन्न व्यवस्थाओं में जैन विश्व भारती एवं आचार्यश्री महाश्रमण योगक्षेम वर्ष प्रवास व्यवस्था समिति का पूर्ण सहयोग रहा।

बोलती किताब

क्या कहता है जैन वाङ्मय

"सही सोच और सत्पुरुषार्थ से ही जीवन का उज्ज्वल भविष्य बनता है।"

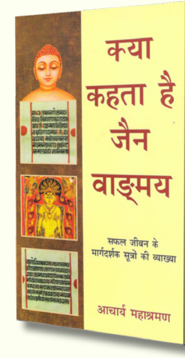

मनुष्य का जीवन केवल भाग्य के भरोसे नहीं चलता, बल्कि उसके कर्म और प्रयास भी उतने ही महत्वपूर्ण होते हैं। जैन वाङ्मय में कहा गया है कि आत्मा ही अपने सुख और दुःख की कर्ता होती है। इसका अर्थ है कि व्यक्ति जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल उसे प्राप्त होता है। यदि व्यक्ति अपने जीवन में अच्छे कार्य, सेवा और सदाचार अपनाता है तो उसका भविष्य भी उज्ज्वल बनता है। इसलिए यह आवश्यक है कि मनुष्य अपने जीवन में सकारात्मक सोच और अच्छे कर्मों को स्थान दे।

आज के समय में कई लोग अपनी असफलताओं का कारण केवल भाग्य को मान लेते हैं और प्रयास करना छोड़ देते हैं। यह सोच व्यक्ति को आलसी और निराश बना देती है। वास्तव में भाग्य और पुरुषार्थ दोनों का संतुलन ही जीवन को सही दिशा देता है। यदि व्यक्ति निरंतर प्रयास करता रहे और अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता रहे, तो कठिन परिस्थितियाँ भी उसे रोक नहीं पातीं। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जहाँ लोगों ने कठिन परिश्रम से अपने जीवन को नई दिशा दी।

साथ ही यह भी महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति अपनी शक्ति और समय का सही उपयोग करे। समय जीवन का सबसे अनमोल धन है, जो एक बार निकल जाने पर वापस नहीं आता। जो लोग समय की कद्र करते हैं और हर अवसर का सही उपयोग करते हैं, वही सफलता के शिखर तक पहुँचते हैं। इसलिए हर व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने जीवन के हर क्षण को सार्थक बनाने का प्रयास करे और निरंतर आत्मविकास की दिशा में आगे बढ़े।

अंततः यह कहा जा सकता है कि मनुष्य अपने जीवन का निर्माता स्वयं होता है। यदि वह अच्छे विचार, संयम, परिश्रम और नैतिक मूल्यों को अपनाए, तो उसका जीवन सुखमय और सफल बन सकता है। जैन वाङ्मय भी यही संदेश देता है कि व्यक्ति अपने कर्मों से ही अपना भाग्य बनाता है। इसलिए हमें सदैव सकारात्मक कर्म करते हुए अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करना चाहिए।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

आत्मा को आत्मा से देखना ही सच्चा ध्यान

केजीएफ।

प्रेक्षा ध्यान कार्यशाला

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी संयमलताजी के सानिध्य में प्रेक्षावाहिनी के अंतर्गत प्रेक्षा ध्यान कार्यशाला हुई। साध्वी श्री ने फरमाया - जैनधर्म में दान, शील, तप और भाव रूपी 4 धर्म हैं। यादृशी भावना यस्य तादृशी सिद्धिस्तस्य-जैसी भावना वैसी सिद्धि। शुद्ध भावों से ही सफलता मिलती है। साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा - तनाव, Overthinking से मुक्ति का उपाय प्रेक्षा ध्यान है। आचार्य महाप्रज्ञजी ने 12 वर्ष साधना कर भीतर जाने का मार्ग बताया।हम ईंट-चुना के घर में रहते हैं, पर भीतर के घर में जाने का प्रयास करें। ध्यान के प्रयोग करवाए गए। युवाओं से आह्वान - रोज 15 मिनट ध्यान करें तो पढ़ाई, व्यवसाय, परिवार में संतुलन बनेगा। श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही। तेरापंथ सभा KGF ने साध्वी वृंद का आभार किया।

सत्ता और राजनीति केवल जनता की सेवा के लिए है, भोग-विलास या वैर-विरोध के लिए नहीं : आचार्यश्री महाश्रमण

'पर भव में कौन जाता है?' विषय पर अमृत देशना;—धन-संपत्ति अध्रुव हैं, शाश्वत ध्रुव को छोड़कर नष्ट होने वाली चीजों के पीछे भागना मूर्खता

लाडनूं।
06 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखंड परिव्राजक, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने शनिवार की सुधर्मा सभा में 'पर भव में कौन जाता है?' विषय पर आगम व शांत सुधारस ग्रंथ के आलोक में पावन प्रतिबोध प्रदान किया। आचार्यश्री ने अनित्य अनुप्रेक्षा के माध्यम से संसार की नश्वरता को समझाते हुए राष्ट्र के राजनेताओं और संघीय व्यवस्थापकों को शुचिता, ईमानदारी और दूरदृष्टि का कड़ा पाठ पढ़ाया।

ध्रुव को छोड़ अध्रुव के पीछे भागना ही मोह: आचार्य प्रवर ने जीवन की अनित्यता और नश्वरता को रेखांकित करते हुए मुख्य बिंदु समझाए।

१. शाश्वत और नश्वर का भेद : जैन दर्शन के अनुसार आत्मा, परमात्मा और अहिंसा रूपी धर्म ही इस ब्रह्मांड में एकमात्र 'ध्रुव' (शाश्वत) सत्य हैं। इसके विपरीत धन-संपत्ति, वैभव, शरीर और सांसारिक संबंध पूरी तरह 'अध्रुव' (नश्वर) हैं। जो मनुष्य सांसारिक पदार्थों के मोह-मूर्च्छा में फंसकर नष्ट होने वाली चीजों के पीछे भागता है, वह अपने शाश्वत ध्रुव (धर्म) को खो देता है।

२. उम्र घटाता हर ढलता सूरज : हर दिन का सूर्यास्त मानव जीवन का एक दिन अपने साथ लेकर चला जाता है। लोग जन्मदिन आने पर बड़ी खुशियाँ मनाते हैं, ढोल-नगाड़े बजाते हैं, किंतु इस परम सत्य को भूल जाते हैं कि उसी दिन उनके पूर्ण आयुष्य (उम्र) में से एक वर्ष कम हो चुका होता है। इसलिए समय रहते धर्म का संचय कर लेना ही बुद्धिमानी है।

राजनीति पर कड़ा बोध: सत्ता भोग नहीं, सेवा का साधन: शांतिदूत ने वर्तमान लोकतांत्रिक और राजनीतिक मूल्यों पर गंभीर मार्गदर्शन दिया।

१. ईमानदारी और सिद्धांतवादी हो राजनेता : राजनीति स्वयं में कोई बुरी चीज नहीं है, बल्कि यह जनता जनार्दन की सेवा करने का एक बहुत बड़ा और प्रभावी माध्यम है। राजनीति के बिना किसी भी राष्ट्र का सुचारू संचालन असंभव है। इसलिए राजनीति के शीर्ष पर बैठे व्यक्तियों को पूर्ण जानकार, सिद्धांतवादी, निष्पक्ष, ईमानदार और सेवा भावना से ओत-प्रोत होना चाहिए।

२. सत्ता में रहकर वैर-विरोध वर्जित : राजनेताओं को यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि सत्ता और कुर्सी केवल लोक-कल्याण के लिए मिली है, विलासिता या भोग के लिए नहीं। पद और सत्ता का दुरुपयोग कर किसी भी व्यक्ति को दुर्भावनावश संकट में नहीं डालना चाहिए और न ही अपने मन में किसी के प्रति वैर-विरोध का हिंसक भाव रखना चाहिए।

संगठन का भविष्य और उत्तराधिकारी का दायित्व : पूज्य प्रवर ने धार्मिक व सामाजिक संगठनों के सुदृढ़ भविष्य निर्माण पर विशेष प्रकाश डाला।

१. दूरदृष्टि से होता है विकास: चाहे देश को चलाने वाली राजनीति हो या धर्म संघ को चलाने वाला संगठन, नेतृत्व करने वाले राजा या आचार्य को हमेशा भविष्य पर ध्यान देना चाहिए। जो भविष्य की दूरदृष्टि रखकर योजनाएं बनाते हैं, वही श्रेष्ठ कार्य कर पाते हैं।

२.आचार्य के प्रति पूर्ण समर्पण: वर्तमान के उत्तराधिकारी को संघ के दीर्घकालिक विकास और उज्ज्वल भविष्य के लिए सदैव पैनी दृष्टि रखनी चाहिए। अपने आचार्य के पावन मार्गदर्शन और अनुशासन में रहकर पूरे समर्पण भाव से संघीय कार्यों की गतिशीलता को आगे बढ़ाते रहना ही शासन की सच्ची प्रभावना है। मंगल प्रवचन के संपन्न होने पर पूज्य प्रवर आचार्यश्री ने उपस्थित चारित्रात्माओं द्वारा प्रस्तुत की गई तात्विक जिज्ञासाओं का आगम के आलोक में सहज समाधान किया।

मारने की क्षमता होने पर भी किसी जीव को न मारना ही है सर्वोच्च अहिंसा, कायरों का नहीं वीरों का मार्ग है धर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं सुधर्मा सभा में एकादशमाधिशास्ता का बोध;छह काय के जीवों को अभयदान देने वाले साधु के सामने दुनिया के सारे दानवीर छोटे

लाडनूं।
05 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'अभयदाता बनो' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र (उत्तरज्झयणाणि आगम) के आलोक में पावन प्रतिबोध प्रदान किया। आचार्यश्री ने फरमाया कि संसार में अन्न, वस्त्र और स्वर्ण के अनेक दानवीर हो सकते हैं, परंतु छह काय के जीवों को अभयदान देने वाले साधु से बड़ा दानी ब्रह्मांड में कोई नहीं है।

अहिंसा शौर्ययुक्त हो, कायरता की निशानी नहीं : आचार्य प्रवर ने अहिंसा के वास्तविक क्षत्रिय धर्म और शौर्य को समझाते हुए मुख्य बिंदु रेखांकित किए।

१.मारने की क्षमता पर नियंत्रण: अहिंसा कोई कायरता या कमजोरी का नाम नहीं है। अहिंसा तो पूर्ण शौर्य और वीर्य (शक्ति) से युक्त होनी चाहिए। यदि किसी व्यक्ति में दूसरे को मारने या दंड

देने की पूरी क्षमता हो, और फिर भी वह संयम रखकर किसी को न मारे, तो वही दुनिया में सबसे बड़ी अहिंसा की बात है।

२.भय का विनय निरर्थक : एक सच्चे अहिंसक को न तो स्वयं किसी से डरना चाहिए और न ही संसार में किसी दूसरे प्राणी को डराना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति केवल भय के मारे किसी के सामने झुकता है या विनय करता है, तो उस विनय का कोई आध्यात्मिक मूल्य नहीं है; सच्चा विनय तो केवल श्रद्धा के भीतर से प्रकट होना चाहिए।

शिकार महाव्यसन, अभयदान ही सर्वश्रेष्ठ : शांतिदूत ने सात व्यसनों पर प्रहार करते हुए गृहस्थ समाज को भी मर्यादा का मार्ग दिखाया।

१. शिकार से बचें गृहस्थ : मानव जीवन को कलंकित करने वाले सात महाव्यसन (जुआ, मांसाहार, मदिरापान, चोरी, वेश्यागमन, परस्त्रीगमन और शिकार) बताए गए हैं। शिकार करना चेतना को क्रूर बनाता है। भले ही गृहस्थ पूरी तरह से अहिंसक न बन सके, परंतु उसे कम से कम निर्दोष मूक प्राणियों के शिकार रूपी इस महापाप से हर हाल में बचना चाहिए।

> धन्य हैं वे माता-पिता जो अपनी संतानों को धर्म संघ के कल्याण पथ पर कर देते हैं समर्पित
> -आचार्यश्री महाश्रमण

२.अहिंसा की संवर-निर्जरा साधना : साधु की साधना ऐसी उत्कृष्ट होती है जिसके आत्म प्रदेशों में—यानी आत्मा के चप्पे-चप्पे पर—अहिंसा का भाव अखंड रूप से पुष्ट रहता है। जीवन की अनित्यता को देखकर मनुष्य को संवर और निर्जरा रूपी अध्यात्म के मार्ग पर कदम बढ़ाना चाहिए ताकि वह एक दिन अपनी अंतिम मुक्ति रूपी मंजिल को प्राप्त कर सके।

त्रुटि पर तुरंत खमत-खामणा की परंपरा : आगम की प्रेरक कथाओं का दृष्टांत देते हुए पूज्य प्रवर ने विनय धर्म की मर्यादा पर विशेष प्रकाश डाला।

१. आशातना का तुरंत परिहार: चाहे साधु हो या गृहस्थ, जीवन में कभी भी किसी भी जीव या गुरु की आशातना (अवहेलना) नहीं करनी चाहिए। यदि अज्ञानवश या भूल से कभी किसी की आशातना हो भी जाए, तो बिना किसी अहंकार के तुरंत 'खमत-खामणा' (क्षमा याचना) कर लेनी चाहिए। यही जैन शासन की महान विनय प्रतिपत्ति की समृद्ध परंपरा है।

२. धन्य हैं समर्पित माता-पिता : पूज्य प्रवर ने शासन गौरव की अभिवृद्धि करने वाले कुलों की सराहना करते हुए फरमाया कि वे माता-पिता वास्तव में इस संसार में धन्य हैं, जो अपनी प्रिय संतानों को सांसारिक मोह-माया से ऊपर उठाकर इस महान धर्म संघ और संयम के मार्ग के लिए समर्पित कर देते हैं। मंगल देशना के संपन्न होने पर सुधर्मा सभा में उपस्थित मुनि कमलकुमार जी ने चतुर्विध धर्मसंघ के सम्मुख आज के विषय के आलोक में अपनी बहुत ही सारगर्भित, ओजस्वी और भावपूर्ण अभिव्यक्ति प्रस्तुत की।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

अनशन

जीवन का मूल्य मृत्यु के मूल्य से जुड़ा हुआ है। जिसकी मृत्यु समाधिपूर्ण होती है, उसका जीवन का मूल्य बढ़ जाता है। जो अन्तिम चरण में असफल होता है, जिसकी मृत्यु असमाधि के क्षणों में होती है, उसके जीवन का मूल्य भी कम हो जाता है।

आचार्य भिक्षु ने समाधि का जीवन जीया और समाधि की मृत्यु का वरण किया। जब मृत्यु के लक्षण प्रकट होने लगे, तब वे अधिक जागरूक बन गए। सं. 1866 सिरियारी गांव में चातुर्मासिक प्रवास। प्रवास स्थल कच्ची हाट तथा पक्की हाट। भाद्रव शुक्ला 12 का दिन। आचार्य भिक्षु ने बेला– दो दिन की तपस्या शुरू की। वे कच्ची हाट में लेटकर विश्राम कर रहे थे। ऋषि रायचन्दजी उनके पास आकर बोले– स्वामीजी! कृपा कर दर्शन दें। यह सुन आचार्य भिक्षु ने आंखें खोली और उनके सिर पर हाथ रखा। ऋषि रायचन्दजी बोले– स्वामीजी! शरीर का पराक्रम क्षीण हो रहा है। यह सुनते ही स्वामीजी उठ बैठे, जैसे कोई सोया सिंह जागा हो। उन्होंने तत्काल अपने उत्तराधिकारी भारमलजी तथा सतजुगीजी को बुलाया। वे तत्काल उपस्थित हुए। आचार्य भिक्षु ने अरिहन्त और सिद्ध भगवान् को नमोत्थुणं (शक्रस्तुति) के पाठ द्वारा नमस्कार किया और श्रावक और श्राविकाओं की उपस्थिति में उच्च स्वर में बोले– मैं अब आजीवन तीन आहार (पानी के अतिरिक्त शेष आहार) का प्रत्याख्यान करता हूं।

जब आचार्य भिक्षु ने अनशन किया तब दिन का अन्तिम दुघड़िया चल रहा था, दो घड़ी दिन शेष था। समाधि-मृत्यु की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कड़ी जुड़ गई।

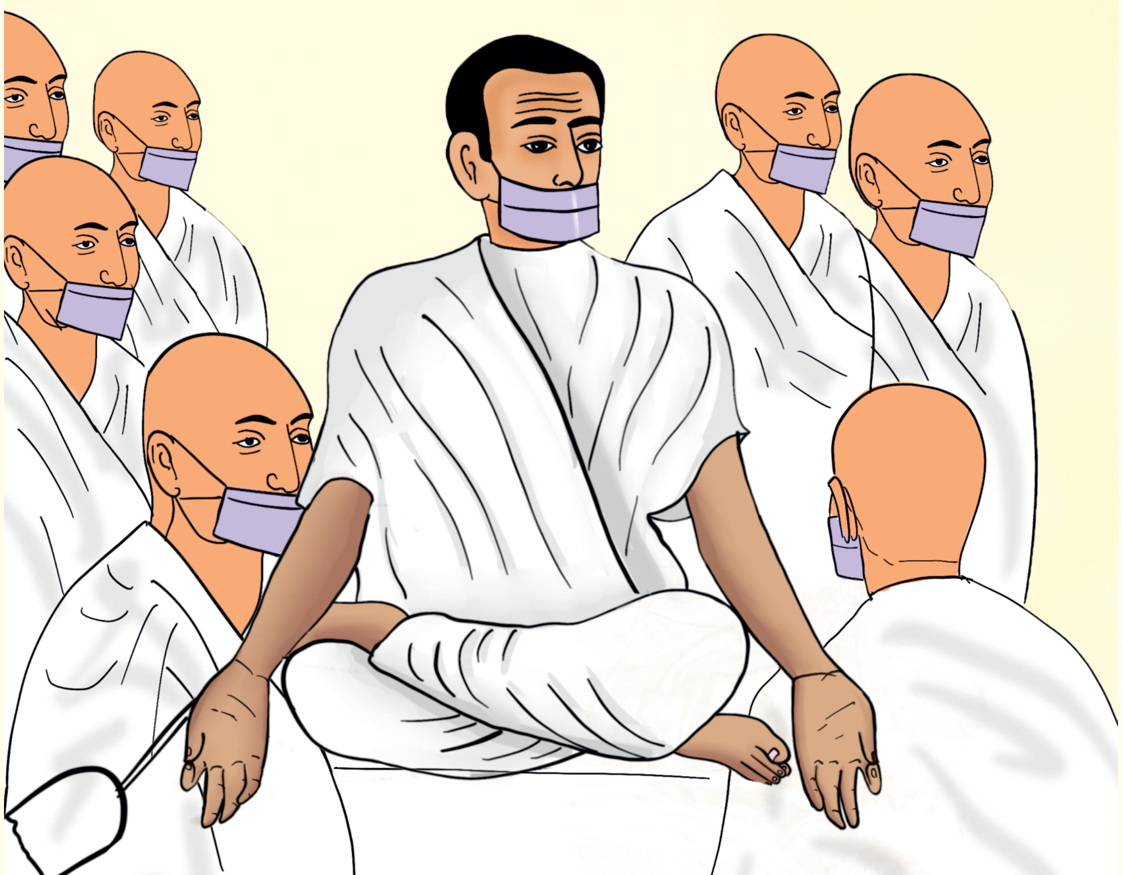

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

तीन नौकाएं

अच्छे और बुरे गुरु पर स्वामीजी ने नौका का दृष्टांत दिया– तीन नौकाएं हैं– एक तो काष्ठ की अखंड नौका है। दूसरी काष्ठ की फूटी हुई नौका है और तीसरी पत्थर की नौका है।

अखंड नौका के समान साधु होता है जो स्वयं तरता है और दूसरों को तारता है। फूटी हुई नौका के समान वेषधारी होता है, जो स्वयं डूबता है और दूसरों को डुबोता है। पत्थर की नौका के समान तीन सौ तिरेसठ पाषंडी होते हैं। वे प्रत्यक्ष विरुद्ध दिखाई देते हैं।

समझदार आदमी प्रथमतः तो उन्हें मानता नहीं और कदाचित् गुरु किए हुए हों तो भी उनको छोड़ना उसके लिए सरल है। फूटी नौका के समान वेषधारी होते हैं उन्हें छोड़ना कठिन होता है। कोई चतुर बुद्धिमान होता है उन्हें छोड़ सकता है।

साप्ताहिक प्रेरणा

॥ किसी भी 2 विगय का त्याग करे ॥

क्या आप जानते हैं?

फ्रीज खोलते समय हिलने की संभावना रहती है, अतः उसमें से निकालकर बहराना विहित नहीं हैं।

जानें तेरापंथ को पहचाने स्वयं को

भाग्य और पुरुषार्थ

बचपन से एक वाक्य हम सुनते आ रहे हैं कि मेहनत करो सफलता मिलेगी। लेकिन यह नहीं बताया कि क्या मेहनत करें? कहां मेहनत करें? यदि सही दिशा में प्रयास करें तो निश्चित ही सफलता मिलेगी। बहुत से लोग भाग्य को तवज्जो देते हैं, कुछ लोग पुरुषार्थ को भी देते हैं। प्रश्न यह है कि भाग्य क्या और पुरुषार्थ क्या? दोनों अलग-अलग है या एक ही। आचार्य हमें समाधान देते हैं कि पुरुषार्थ और भाग्य एक सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। अतीत क्षण तक पुरुषार्थ ही वर्तमान का निर्माण करते हैं अथवा भाग्य का निर्माण करते हैं। अच्छे भाग्य की कामना सभी करते हैं किंतु अच्छा पुरुषार्थ विरले ही कर पाते हैं। इसलिए विरले ही सफलता का स्वाद चख पाते हैं। अतः अच्छे भाग्य के इच्छुक मानव सदा अच्छे पुरुषार्थ के प्रति लगन रखें। अच्छा पुरुषार्थ ही अच्छे भाग्य का जनक है। अच्छा पुरुषार्थ कर्म संक्रमण भी करता है, अर्थात् यदि पापोदय हो अथवा सत्ता में पाप कर्म हो तो सम्यक् पुरुषार्थ उसे पुण्योदय में भी बदल सकता है। अतः भाग्य के ही भरोसे न बैठे पुरुषार्थी बनें।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
15 जून - 21 जून 2026

बहुत बड़े पांडित्य के बिना भी कषाय मंदता और आचार की शुद्धि से निश्चित है आत्मा का कल्याण : आचार्यश्री महाश्रमण

सुधर्मा सभा में एकादशमाधिशास्ता का बोध;—ज्यादा पांडित्य न हो, पर कषाय मंद और आचार अच्छा हो तो भी आत्मा का कल्याण निश्चित

लाडनूं।
04 जून, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, अहिंसा के अग्रदूत, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में लाडनूं की धरा पर स्थित जैन विश्व भारती में योगक्षेम वर्ष के आध्यात्मिक कार्यक्रम गतिमान हैं। सुधर्मा सभा में 'सुव्रत रहो' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से पावन प्रतिबोध प्रदान करते हुए आचार्यश्री ने अवचेतन मन की शुद्धि, कषाय मंदता और कर्म-निर्जरा के गहन रहस्यों को प्रकट किया।

> साधना के मार्ग में मोहनीय कर्म ही है 'सेनापति', इसके नष्ट होते ही अन्य कर्म अपने आप चले जाते हैं
> –आचार्यश्री महाश्रमण

स्वप्न में भी विस्मृत न हो महाव्रतों की मर्यादा : आचार्य प्रवर ने साधुत्व की अंतःचेतना को जागृत करते हुए मुख्य बिंदु रेखांकित किए।

१. अमृत की तरह पूजित सुव्रत मुनि : जो साधक पाप श्रमण कहलाने वाले सभी दोषों का सदा के लिए वर्जन (त्याग) कर देता है, वह मुनियों में 'सुव्रत' होता है। व्रत, संयम और संन्यास रूपी इस अमृत का पान करने वाला साधु इस लोक में पूजित होकर अमर बन जाता है और उसकी आत्मा मोक्षगामी होती है।

२. अवचेतन मन की पुष्टता : पूज्य प्रवर ने फरमाया कि 'मैं साधु हूँ' यह भावना साधक के भीतर और अवचेतन मन में इतनी गहरी पुष्ट हो जानी चाहिए कि यदि रात्रि में स्वप्न भी आए, तो उसमें भी अपनी साधुता और सुव्रत होने का ही आभास हो। पांच महाव्रतों, पांच समितियों और तीन गुप्तियों की अखंड साधना ही सुव्रती का वास्तविक लक्षण है।

मोहनीय कर्म का नाश और आचार की महत्ता : शांतिदूत ने दार्शनिक दृष्टिकोण से कर्मों के राजा और आचार की शक्ति को समझाया।

१. सेनापति के गिरते ही सेना ढेर : साधना के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा मोहनीय कर्म है। यह कर्म कर्म-दल का 'सेनापति' है। यदि साधना के बल पर यह सेनापति नष्ट हो जाए, तो ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तराय कर्म रूपी बाकी की सेना अपने आप नष्ट हो जाती है।

२. पांडित्य के बिना भी कल्याण : दुनिया में ज्ञान, क्रिया और अक्रिया के कई सिद्धांत हैं, पर अनेकांत दृष्टि कहती है कि यदि कोई साधु शास्त्रों का बहुत बड़ा ज्ञाता (पांडित्य) नहीं भी है, लेकिन वह अपने महाव्रतों का आचार पूरी शुद्धि से पालता है और कषाय मंद रखता है, तो वह भी १२वें गुणस्थान तक पहुँचकर अपनी आत्मा का कल्याण कर सकता है। ज्ञान एक ऐसी तलवार और अग्नि है जो अज्ञान के अंधकार को काट देती है, और यह समुद्र से नहीं बल्कि आत्मा के भीतर से प्रकट होने वाला अमृत है।

७५ वर्ष से अधिक के वृद्ध संतों को पाथेय : आचार्यप्रवर ने संघ के वरिष्ठ संतों और अपनी क्षमतानुसार निर्जरा करने के व्यावहारिक सूत्र दिए।

सुप्रणिधान और स्वावलंबन: संघ में जो चारित्रात्माएं ७५ वर्ष से अधिक आयु की हो चुकी हैं, वे अपने आपको सुप्रणिधान साधना (गहन आत्म-लीनता) में नियोजित करें। इसके साथ ही, जहाँ तक संभव हो, हर साधु को अंतिम समय तक स्वावलंबी जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए। अपनी रुचि के अनुसार संत स्वाध्याय, तप, सेवा या नवकार व लोगस्स का जप कर कर्म-निर्जरा कर सकते हैं।

मुमुक्षु बहिन प्रेक्षाध्यान शिविर की शुरुआत : जैन विश्व भारती में आध्यात्मिक चेतना के एक और नए अध्याय का सूत्रपात हुआ। प्रारंभ हो रहे मुमुक्षु बहिन प्रेक्षाध्यान शिविर के संदर्भ में पूज्य प्रवर आचार्य श्री महाश्रमण जी ने शिविरार्थी मुमुक्षु बहिनों को मांगलिक पाठ सुनाकर इस विशेष साधना सत्र की उपसंपदा (दीक्षा-पूर्व मानसिक तैयारी का संकल्प) प्रदान की और उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना की।

योगक्षेम वर्ष चित्रमय झलकियां

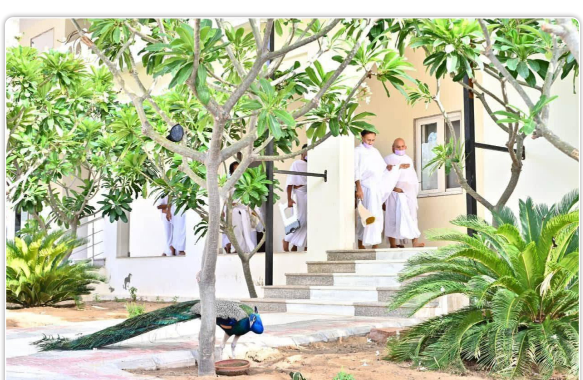

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।